पु•ना International School
Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Grade –VII

Sanskrit

Specimen

Copy

Year- 2022-23

अनुक्रमणिका

LESSON No-	TITLE
प्रथम: पाठ:	सुभाशितानि
द्वितीय: पाठ:	दुर्बुद्धि: विनश्यति
तृतीय: पाठ:	स्वाव्लाम्बनाम
चतुर्थ: पाठ:	हास्यबालाक विसम्मेलानाम
पच्च्म: पाठ:	पण्डिता रमाबाई
षष्ठ: पाठ:	सदाचार:
सप्तम: पाठ:	संकल्प: सिद्धीदायक:
अष्टम: पाठ:	त्रिवर्ण: ध्वज:

प्रथमः पाठः सुभाशितानि

सरलार्थ -

क-पृथ्वी के ऊपर जल, अन्न अन्न और सुवचन ये तीन रत्न हैं, परंतु मूर्खों के द्वारा पत्थर के टुकड़े को रत्न का नाम दिया जाता है।

ख-सत्य से पृथ्वी धारण की जाती है। सत्य से सूरज तपता है और सत्य से ही वायु प्रवाहित होती है।सब कुछ सत्य में समाहित है।

ग-दान में, तपस्या में, बल में, विशेष ज्ञान में, विनम्रता में, और नीति में निश्चय ही आश्वर्य नही करना चाहिये।पृथ्वी बहुत से रत्न वाली है।

घ-सज्जनों के साथ ही बैठना चाहिये। सज्जनों के साथ संगति करनी चाहिये।सज्जनों के साथ विवाद और मित्रता करनी चाहिये। असज्जनों अर्थात दुष्टों के साथ नहीं।

ड-धन धान्य के प्रयोग में और विद्या के संचय में आहार और ? व्यवहार में संकोच को छोड़ने वाला अर्थात उदार मनवाला व्यक्ति सुखी होता है।

च-क्षमा संसार में सबसे बडा वशीकरण है। क्षमा से क्या पूर्ण नही हो सकता? जिसके हाथ में क्षमारूपी तलवार है, उसका दुष्ट व्यक्ति क्या कर सकता है?कुछ बुरा नही कर सकता।

प्रश्नः 2.यथायोग्यं श्लोकांशान् मेलयत-(श्लोकांशों को यथायोग्य मिलाइए-Match the parts of the shlokas correctly.)

'क' - 'ख'
1. धनधान्यप्रयोगेषु - नासद्भिः किञ्चिदाचरेत्।
2. विस्मयो न हि कर्तव्यः - त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्।
3. सत्येन धार्यते पृथ्वी - बहुरत्ना वसुन्धरा।
4. सद्भिर्विवादं मैत्रीं च - विद्यायाः संग्रहेषु च।
5. आहारे व्यवहारे च - सत्येन तपते रविः।

उत्तराणि:

'क' - 'ख'
1. धनधान्यप्रयोगेषु - विद्यायाः संग्रहेषु च।

2. विस्मयो न हि कर्त्तव्यः - बहुरत्ना वसुन्धरा।
3. सत्येन धार्यते पृथ्वी - सत्येन तपते रविः।
4. सद्भिर्विवादं मैत्रीं च - नासद्भिः किञ्चिदाचरेत्।
5. आहारे व्यवहारे च - त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्।

प्रश्नः 3.एकपदेन उत्तरत-(एक शब्द में उत्तर दीजिए-Answer in one word.)

(क) पृथिव्यां कति रत्नानि?
(ख) मूढैः कुत्र रत्नसंज्ञा विधीयते?
(ग) पृथिवी केन धार्यते?
(घ) कैः सङ्गतिं कुर्वीत?
(ङ) लोके वशीकृतिः का?
उत्तराणि:
(क) त्रीणि
(ख) पाषाणखण्डेषु
(ग) सत्येन
(घ) सद्भिः
(ङ) क्षमा।

प्रश्नः 4.रेखाङ्कितपदानि अधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत -
(रेखांकित पदों को आधार बनाकर प्रश्न निर्माण कीजिए-Frame questions based on the underlined words.)

(क) <u>सत्येन</u> वाति वायुः।
(ख) <u>सद्भिः</u> एव सहासीत।
(ग) <u>वसुन्धरा</u> बहुरत्ना भवति।
(घ) <u>विद्यायाः</u> संग्रहेषु त्यक्तलज्जः सुखी भवेत् ।
(ङ) सद्भिः <u>मैत्री</u> कुर्वीत।
उत्तराणि:
(क) <u>केन</u> वाति वायुः?
(ख) <u>कैः</u> एव सहासीत?
(ग) <u>का</u> बहुरत्ना भवति?
(घ) <u>कस्याः</u> संग्रहेषु त्यक्तलज्जः सुखी भवेत् ?
(ङ) सद्भिः <u>किं कां</u> कुर्वीत?

प्रश्न: 5.प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत-
(प्रश्नों के उत्तर लिखिए-Answer the following questions.)

(क) कुत्र विस्मयः न कर्तव्यः?
उत्तराणि:
दाने, तपसि, शौर्ये, विज्ञाने, विनये, नये च विस्मयः न कर्तव्यः ।

(ख) पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि कानि?
उत्तराणि:
पृथिव्यां जलं, अन्नं सुभाषितम् च त्रीणि रत्नानि सन्ति ।

(ग) त्यक्तलज्जः कुत्र सुखी भवेत्?
उत्तराणि:
धन-धान्य-प्रयोगे, विद्यायाः संग्रहेषु, आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत् ।

प्रश्न: 6.मञ्जूषातः पदानि चित्वा लिङ्गानुसारं लिखत- (मञ्जूषा से शब्दों को चुनकर लिंग के अनुसार लिखिए- Fill in the blanks by choosing suitable gender words from the box)

[रत्नानि, वसुन्धरा, सत्येन, सुखी, अन्नम्, बह्निः, रविः, पृथ्वी, सङ्गतिम्]

पुँल्लिङ्गम्	स्त्रीलिङ्गम्	नपुंसकलिङ्गम्
सुखी	वसुन्धरा	रत्नानि
वह्निः	पृथ्वी	सत्येन
रविः	सङ्गतिम्	अन्नम्

उत्तराणि:

पुँल्लिङ्गम्	स्त्रीलिङ्गम्	नपुंसकलिङ्गम्
…………………	…………………	…………………
…………………	…………………	…………………
…………………	…………………	…………………

प्रश्न: 7.अधोलिखितपदेषु धातवः के सन्ति? (नीचे लिखे हुए शब्दों में धातुएँ कौन-कौन सी हैं? What are the roots in given words?)

पदम् - धातुः
करोति - ....
पश्य - ....
भवेत् - ....
तिष्ठति - ....
उत्तराणि:
पदम् - धातुः
करोति - कृ
पश्य - दृश्
भवेत् - भू
तिष्ठति - स्था

Class 7 Sanskrit Chapter 1 सुभाषितानि Additional Important Questions and Answers

(1) पद्यांशं पठित्वा अधोदत्तान् प्रश्नान् उत्तरत- (पद्यांश पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए- Read the extract and answer the questions that follow.)

सत्येन धार्यते पृथ्वी सत्येन तपते रविः।
सत्येन वाति वायुश्च सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्॥

I. एकपदेन उत्तरत

(i) पृथ्वी कथं धार्यते ?
उत्तराणि:
सत्येन

(ii) कः सत्येन तपते ?
उत्तराणि:
रविः

(iii) सर्वं कस्मिन् प्रतिष्ठितम् ?
उत्तराणि:
सत्ये

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत

सत्येन किं किं भवति?
उत्तराणि:
सत्येन पृथ्वी धार्यते, सत्येन रविः तपति, सत्येन एव च वायुः वहति।

III. भाषिककार्यम्-

यथानिर्देशम् रिक्तस्थानानि पूरयत -

(i) सत्येन - अत्र का विभक्ति? – ……………….. (द्वितीया, तृतीया, सप्तमी)
उत्तराणि:
तृतीया

(ii) प्रतिष्ठितम् - अत्र कः धातुः? – ……………….. (तिष्ठ, स्था, प्रति)
उत्तराणि:
स्था

(iii) पर्यायः कः?
(क) वहति - ………………..
(ख) पवनः - ………………..
उत्तराणि:
(क) वाति
(ख) वायुः

(iv) श्लोके किम् अव्ययपदम् अस्ति?
उत्तराणि:
च

(2) शुद्धस्य कथनस्य समक्षे 'आम्' अशुद्धस्य च समक्षे 'नहि' लिखत- (शुद्ध कथन के सामने 'आम्' और अशुद्ध के सामने 'नहि' लिखिए- write आम्'opposite the correct statement and'fe'opposite the incorrect one.)

(i) पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि इति मूढाः वदन्ति।

उत्तराणि:

नहि

(ii) क्षमा सर्वं साधयति।

उत्तराणि:

आम्

(iii) सर्वं विज्ञाने प्रतिष्ठितम्।

उत्तराणि:

नहि

(iv) सज्जनैः सह मित्रतां कुर्यात्।

उत्तराणि:

आम्

(v) सद्भिः किंचिद् न आचरेत्।

उत्तराणि:

नहि

(3) अधोदत्तान् शब्दान् परस्परं मेलयत- (निम्नलिखित शब्दों का परस्पर मेल कीजिए- Match the following.)

(क) शब्दार्थाः

'क' - 'ख'

1. पृथ्वी - हस्ते
2. सद्भिः - दुर्जनैः
3. रविः - वहति
4. करे - वसुन्धरा
5. वाति - भानुः
6. लोके - सज्जनैः
7. असद्भिः - संसारे

उत्तराणि:

1. पृथ्वी-वसुन्धरा

2. सद्भिः-सज्जनैः
3. रविः-भानुः
4. करे-हस्ते
5. वाति-वहति
6. लोके-संसारे
7. असद्भिः-दुर्जनैः।

(ख) श्लोकांशा:'

'क' - 'ख'
1. आहारे व्यवहारे च - (i) किं करिष्यति दुर्जनः।
2. विस्मयो न हि कर्त्तव्यो - (ii) बहुरत्ना वसुन्धरा।
3. मूरैः पाषाणखण्डेषु - (iii) त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्।
4. शान्तिखड्गः करे यस्य - (iv) नासद्भिः किञ्चिदाचरेत्।
5. सद्भिर्विवाद मैत्री च - (v) रत्नसंज्ञा विधीयते।
उत्तराणि:
1. (iii) त्यक्तलज्जः सुखी भवेत्।
2. (ii) बहुरत्ना वसुन्धरा।
3. (v) रत्नसंज्ञा विधीयते।
4. (i) किं करिष्यति दुर्जनः।
5. (iv) नासद्भिः किञ्चिदाचरेत्।

(4) (क) मञ्जूषायाः सहायतया श्लोकस्य अन्वयं पूरयत- (मञ्जूषा की सहायता से श्लोक का अन्वय पूरा कीजिए- Complete the prose order of the shloka with help of the box.)

दाने तपसि शौर्ये च विज्ञाने विनये नये।
विस्मयो न हि कर्त्तव्यो बहुरत्ना वसुन्धरा॥
दाने तपसि .... विज्ञाने विनये नये............
... न हि कर्त्तव्यो .... बहुरत्ना (अस्ति)।।
मञ्जूषा- विस्मयः, च, वसुन्धरा, शौर्ये
उत्तराणि:
शौर्ये, च विस्मयः, वसुन्धरा।

(ख) मञ्जूषायाः सहायतया श्लोकस्य भावार्थं पूरयत- (मञ्जूषा की सहायता से श्लोक का भावार्थ पूरा कीजिए- Complete the central idea of the verse with help of the box.)

'क्षमावशीकृतिः' लोके क्षमया किं न साध्यते।
यः जनः .... भवति, सर्वे जनाः तस्य ....भवन्ति। .... एव सर्वाणि कार्याणि ....|
मञ्जूषा- क्षमा, वशे, क्षमाशीलः, साधयति।
उत्तराणि:
क्षमाशीलः, वशे, क्षमा, साधयति।

बहुविकल्पीयप्रश्नाः(1) रेखाङ्कितपदम् आधृत्य उचितविकल्पेन प्रश्ननिर्माणं कुरुत। (रेखांकित पद के आधार पर उचित विकल्प द्वारा प्रश्न निर्माण कीजिए- On the basis of underlined words frame questions with the appropriate option.)

(i) पृथिव्यां <u>त्रीणि</u> रत्नानि। (कति, का, कानि)
उत्तराणि:
पृथिव्यां <u>कति</u> रत्नानि?

(ii) क्षमा वशीकृतिः <u>लोके</u>। (कुतः, कुत्र, का)
उत्तराणि:
क्षमा <u>कुत्र</u> वशीकृतिः?

(iii) <u>विस्मयः</u> न हि कर्त्तव्यः। (किम्, कः, का)
उत्तराणि:
<u>कः</u> न हि कर्त्तव्यः?

(iv) सर्वं <u>सत्ये</u> प्रतिष्ठितम्। (के, केन, कस्मिन्)
उत्तराणि:
सर्वं <u>कस्मिन्</u> प्रतिष्ठितम्?

(2) प्रदत्तेभ्यः विकल्पेभ्यः उचितं पदं चित्वा श्लोकांशान् पूरयत। (दिए गए विकल्पों से उचित पद चुनकर श्लोकांश पूरे कीजिए। Pick out the appropriate word from the options given and complete the following verses.)

(i) मूढः .... रत्नसंज्ञा विधीयते। (धनधान्यप्रयोगेषु, पाषाणखण्डेषु, पृथिव्याम्)
उत्तराणि:
पाषाणखण्डेषु

(ii) सद्भिः कुर्वीत .... । (सुभाषितम्, प्रतिष्ठितम्, सङ्गतिम्)
उत्तराणि:
सङ्गतिम्

(iii) .... करे यस्य किं करिष्यति दुर्जनः। (क्षमाखड्गः, शान्तिखड्गः, क्षमावशीकृतिः)
उत्तराणि:
शान्तिखड्गः

(iv) सत्येन .... पृथ्वी। (साध्यते, भवेत्, धार्यते)
उत्तराणि:
धार्यते

द्वितीय: -पाठ: - दुर्बुद्धि: विनश्यति

सरलार्थ

क-मगध प्रदेश में फुल्लोत्पल नामक तालाब था।वहाँ संकट और विकट नामक दो हंस रहते थे।कम्बुग्रीव नामक उन दोनो का मित्र एक कछुआ भी वहीं रहता था।

ख–इसके पश्चात एक बार मछुआरे वहाँ आये और कहा–हम सब कल मछली ,कछुए आदि को मारेंगे।यह सुनकर कछुआ बोला-मित्र,क्या तुमने मछुआरों की बातचीत सुनी। अब मैं क्या करुँ? दोनों हंस बोले-सुबह जो उचित है,वह करना चाहिए। कछुआ बोला- ऐसा मत करो,जिससे मैं दूसरे तालाब पर जा सकूँ, वैसा करो। दोनों हंस बोले- हम दोनों क्या करें? कछुआ बोला- मैं तुम दोनों के साथ आकाश मार्ग से दूसरे स्थान पर जाने की इच्छा करता हूँ।

ग–हंस बोला–यहाँ क्या उपाय है? कछुआ बोला–तुम दोनों एक लकड़ी के डंडे को चोंच से पकड़ो। मैं लकड़ी के डंडे के बीच में लटक कर तुम दोनों के पंखों के बल से सुखपूर्वक जा सकता हूँ। हंस बोले–यह उपाय हो सकता है। पर यहाँ

एक हानि भी है। हमदोनों के द्वारा ले जाए जाते हुए तुम्हें देखकर लोग कुछ बोलेंगे ही। यदि तुम उत्तर दोगे तब तुम्हारा मरना निश्चित है,इसलिए तुम यही रहो। उसे सुन कर गुस्से से कछुआ बोला-क्या मैं मूर्ख हूँ? मैं कोई उत्तर नही दुंगा। मैं कुछ भी नही बोलुंगा। इसलिए जैसा कहता हूँ,वैसा तुम दोनों करो।

घ-इस प्रकार लकड़ी के डंडे पर लटके हुए कछुए को नगर के लोगों ने देखा।

बाद मे पीछे दौड़े और बोले-अहा-बहुत अचम्भा है। हंसों के साथ कछुआ भी उड़ रहा है। कोई बोला- यदि यह कछुआ कैसे भी गिरता है ,तब यही इसको पका कर खाऊँगा। दूसरा आदमी बोला-तालाब के किनारे पका कर खाऊँगा। अनय बोले -घर ले जा कर खाऊँगा।

ड-उनके वचनों को सुनकर कछुआ बहुत क्रोधित हुआ और अपने मित्रों को दिया वचन भूलकर बोल पड़ा कि तुम सब खाक खाओगे। उसी पल कछुआ जमीन पर गिर पड़ा और लोगों ने उसे मार दिया। इसलिए कहा जाता है कि कल्याण करनेवाले मित्रों की बात जो नही मानता है वह लकड़ी से गिरे कम बुद्धीवाले कछुए के समान नष्ट हो जाता है।

प्रश्न: 2.एकपदेन उत्तरत- (एक शब्द में उत्तर दीजिए- Answer in one word.)

(क) कूर्मस्य किं नाम आसीत् ?

उत्तराणि:

कम्बुग्रीवः

(ख) सरस्तीरे के आगच्छन्?

उत्तराणि:

धीवराः

(ग) कूर्मः केन मार्गेण अन्यत्र गन्तुम् इच्छति?

उत्तराणि:

आकाशमार्गेण

(घ) लम्बमानं कूर्मं दृष्ट्वा के अधावन् ?

उत्तराणि:

पौराः।

प्रश्नः 4.मञ्जूषातः क्रियापदं चित्वा वाक्यानि पूरयत- (मञ्जूषा से क्रियावाचक शब्दों को चुनकर वाक्यों की afd ailfote- Fill in the blanks of the sentences by suitable verbs from the box.)

अभिनन्दति, भक्षयिष्यामः, इच्छामि, वदिष्यामि, उड्डीयते, प्रतिवसति स्म

(क) हंसाभ्यां सह कूर्मोऽपि ....
उत्तराणि:
हंसाभ्यां सह कूर्मोऽपि उड्डीयते।

(ख) अहं किञ्चिदपि न ....
उत्तराणि:
अहं किञ्चिदपि न वदिष्यामि।

(ग) यः हितकामानां सुहृदां वाक्यं न .....
उत्तराणि:
यः हितकामानां सुहृदां वाक्यं न अभिनन्दति ।

(घ) एकः कूर्मः अपि तत्रैव ....
उत्तराणि:
एकः कूर्मः अपि तत्रैव प्रतिवसति स्म।

(ङ) अहम् आकाशमार्गेण अन्यत्र गन्तुम् ....
उत्तराणि:
अहम् आकाशमार्गेण अन्यत्र गन्तुम् इच्छामि ।

(च) वयं गृहं नीत्वा कूर्मं ....
उत्तराणि:
वयं गृहं नीत्वा कूर्मं भक्षयिष्यामः।

प्रश्नः 5.पूर्णवाक्येन उत्तरत- (एक वाक्य में उत्तर दीजिए- Answer in one sentence.)

(क) कच्छपः कुत्र गन्तुम् इच्छति?
उत्तराणि:
कच्छपः आकाशमार्गेण अन्यत्र गन्तुम् इच्छति।

(ख) कच्छपः कम् उपायं वदति ?
उत्तराणि:
कच्छपः उपायं वदति-"युवां काष्ठदण्डम् चञ्चवा धारयतम्, अहं काष्ठदण्डमध्ये अवलम्ब्य युवयोः पक्षबलेन सुखेन गमिष्यामि।"

(ग) लम्बमानं कूर्मं दृष्ट्वा पौराः किम् अवदन् ?
उत्तराणि:
लम्बमानं कूर्मं दृष्ट्वा पौराः अवदन्- "हंहो! महदाश्चर्यं हंसाभ्याम् सह कूर्मोऽपि उड्डीयते।"

(घ) कूर्मः मित्रयोः वचनं विस्मृत्य किम् अवदत् ?
उत्तराणि:
कूर्मः मित्रयोः वचनं विस्मृत्य अवदत्-"यूयं भस्मं खादत।"

प्रश्नः 6.घटनाक्रमानुसारं वाक्यानि लिखत- (घटनाक्रम के अनुसार वाक्यों को पुनः लिखिए- Rewrite the sentences in order as they took place.)

(क) कूर्मः हंसयोः सहायतया आकाशमार्गेण अगच्छत् ।
उत्तराणि:
कूर्मः हंसौ च एकस्मिन् सरसि निवसन्ति स्म।

(ख) पौराः अकथयन्-वयं पतितं कूर्मं खादिष्यामः ।
उत्तराणि:
केचित् धीवराः सरस्तीरे आगच्छन्।

(ग) कूर्मः हंसौ च एकस्मिन् सरसि निवसन्ति स्म।
उत्तराणि:
'वयं श्वः मत्स्यकूर्मादीन् मारिष्यामः' इति धीवराः अकथयन् ।

(घ) केचित् धीवराः सरस्तीरे आगच्छन्।
उत्तराणि:
कूर्मः अन्यत्र गन्तुम् इच्छति स्म।

(ङ) कूर्मः अन्यत्र गन्तुम् इच्छति स्म।
उत्तराणि:
कूर्मः हंसयोः सहायतया आकाशमार्गेण अगच्छत् ।

(च) लम्बमानं कूर्मं दृष्ट्वा पौराः अधावन्।
उत्तराणि:
लम्बमानं कूर्मं दृष्ट्वा पौराः अधावन्।

(छ) कूर्मः आकाशात् पतितः पौरैः मारितश्च ।
उत्तराणि:
पौराः अकथयन्-वयं पतितं कूर्मं खादिष्यामः ।

(ज) 'वयं श्वः मत्स्यकूर्मादीन् मारिष्यामः' इति धीवराः अकथयन्।
उत्तराणि:
कूर्मः आकाशात् पतितः पौरैः मारितश्च ।

प्रश्नः 7.मञ्जूषातः पदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत- (मञ्जूषा से शब्दों को चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए- Fill in the blanks by choosing suitable words from the box.)

जलाशयम्, अचिन्तयत्, वृद्धः, दुःखिताः, कोटरे, वृक्षस्य, सर्पः, आदाय, समीपे ।

एकस्य वृक्षस्य शाखासु अनेके काका: वसन्ति स्म । तस्य वृक्षस्य 1. ……….. एकः सर्पः अपि अवसत् । काकानाम् अनुपस्थितौ 2. ………… काकानां शिशून् खादति स्म। काका: 3. ………… आसन्। तेषु एक: 4. …………. काकः उपायम् 5. …………. । वृक्षस्य 6. ………… जलाशयः आसीत्। तत्र एका राजकुमारी स्नातुं 7. ………….. आगच्छति । शिलायां स्थितं तस्याः आभरणम् 8. …………. एक: काकः वृक्षस्य उपरि अस्थापयत्। राजसेवकाः काकम् अनुसृत्य 9. ………….. समीपम् अगच्छन् । तत्र ते तं सर्पं च अमारयन् । अतः एवोक्तम्-उपायेन सर्वं सिद्धयति।

उत्तराणि:
1. कोटरे
2. सर्पः
3. दुःखिताः
4. वृद्धः
5. अचिन्तयत्

6. समीपे
7. जलाशयम्
8. आदाय
9. वृक्षस्य।

(1) गद्यांशं पठित्वा अधोदत्तान् प्रश्नान् उत्तरत- (गद्यांश पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए- Read the extract and answer the questions that follow.)

अथ एकदा धीवराः तत्र आगच्छन्। ते अकथयन्- "वयं श्वः मत्स्यकूर्मादीन् मारयिष्यामः।" एतत् श्रुत्वा कूर्मः अवदत्-"मित्रे! किं युवाभ्याम् धीवराणां वार्ता श्रुता? अधुना किम् अहं करोमि?" हंसौ अवदताम्-"प्रातः यद् उचितं तत्कर्तव्यम्।" कूर्मः अवदत्-"मैवम्। तद् यथाऽहम् अन्यं ह्रदं गच्छामि तथा कुरुतम्।" हंसौ अवदताम्-"आवां किं करवाव?" कूर्मः अवदत्-"अहं युवाभ्यां सह आकाशमार्गेण अन्यत्र गन्तुम् इच्छामि।"

I. एकपदेन उत्तरत

(i) तत्र के आगच्छन्?
उत्तराणि:
धीवराः

(ii) कूर्मः केन मार्गेण गन्तुम् इच्छति स्म?
उत्तराणि:
आकाशमार्गेण

II. पूर्णवाक्येन उत्तरत

(i) धीवराः किम् अकथयन्?
उत्तराणि:
धीवराः अकथयन्-'वयं श्वः मत्स्यकूर्मादीन् मारयिष्यामः।'

(ii) कूर्मः हंसौ किम् अवदत्?
उत्तराणि:
कूर्मः हंसौ अवदत्-'यथा अहम् अन्यं ह्रदं गच्छामि तथा कुरुतम्।' अथवा-'अहं युवाभ्यां सह आकाशमार्गेण अन्यत्र गन्तुम् इच्छामि'

III. भाषिककार्यम्

यथानिर्देशम् रिक्तस्थानानि पूरयत -

(i) ………………. अवदताम् ……………….

उत्तराणि:

अवदत्, अवदन्

(ii) गन्तुम् = ………………. धातुः ……………….प्रत्ययः

उत्तराणि:

गम्, तुमुन्

(iii) पर्यायम् लिखत- कच्छपः = ……………….

उत्तराणि:

कूर्मः

(iv) 'अहं युवाभ्याम् सह अन्यत्र गन्तुम् इच्छामि'-अत्र वाक्ये द्वे अव्ययपदे के?

(i)……………….

(ii) ……………….

उत्तराणि:

(i) सह

(ii) अन्यत्र

(2) मञ्जूषायाः उचितं क्रियापदं चित्वा कथायां रिक्तस्थानानि पूरयत- (मञ्जूषा से उचित क्रियापद चुनकर कथा में रिक्तस्थान भरिए- Pick out the appropriate verb from the box and fill in the blanks in the story.) विस्मरति मारयिष्यामः, वदिष्यन्ति, गमिष्यामि, निवसतः, वसति, इच्छति, वदिष्यामि, भवति, पतति

एकस्मिन् सरोवरे द्वौ हंसौ . । तयोः मित्रम् एकः कूर्मः अपि तत्र । एकदा धीवराः तत्र आगच्छन् अकथयन् च-'वयं श्वः मत्स्यकूर्मादीन् । एतत् श्रुत्वा कूर्मः भयभीतः " । सः अन्यं ह्रदं गन्तुम् .. । सः हंसौ उपायं वदति-'युवां चञ्च्वा काष्ठदण्डं धारयतम् अहं दण्डमध्ये अवलम्ब्य युवाभ्याम् सह आकाशमार्गेण ।' हंसौ वदतः-'जनाः त्वाम् आकाशे दृष्ट्वा विस्मिताः भविष्यन्ति किञ्चित् एव यदि त्वम् उत्तरं दास्यसि तर्हि भूमौ पतिष्यसि मरिष्यसि च।' कूर्मः प्रतिज्ञां करोति-'अहं किञ्चिद् अपि न ……… ।' परं सः हंसाभ्याम् दत्तं वचनं ……दण्डात् …" मृत्यु च गच्छति।

उत्तराणि:

निवसतः, वसति, मारिष्यामः भवति, इच्छति, गमिष्यामि, वदिष्यन्ति, वदिष्यामि, विस्मरति, पतति।

(3) कः कम् प्रति कथयति। (कौन किसे कहता है- Who says to whom.)

उत्तराणि:

(i) कूर्मः, हंसौ

(ii) हंसौ, कूर्मम्

(iii) कूर्मः, हंसौ

(iv) कूर्मः, पौरान्।

(1) उचितविकल्पं चित्वा एकपदेन उत्तरत- (उचित विकल्प चुनकर एकपद में उत्तर दीजिए - Pick out the correct option and answer in one word.)

(i) केषां वचनं श्रुत्वा कूर्मः क्रुद्धः अभवत्? (हंसानाम्, धीवराणां, पौराणाम्)

उत्तराणि:

पौराणाम्

(ii) कूर्मः कम् अवलम्ब्य आकाशमार्गेण गच्छति? (ह्रदम्, काष्ठदण्डम्, उपायम्)

उत्तराणि:

काष्ठदण्डम्

(iii) के पतितं कूर्मं मारयन्ति? (धीवराः, हंसाः, पौराः)

उत्तराणि:

पौराः

(iv) कूर्मः हंसौ किम् वदति? (उत्तरम्, उपायम्, अपायम्)

उत्तराणि:

उपायम्

(v) कूर्मः कीदृशः आसीत्? (सुबुद्धि, चतुरः, दुर्बुद्धिः)

उत्तराणि:

दुर्बुद्धिः।

(2) (क) उचितेन विकल्पेन प्रत्येक प्रश्नम् उत्तरत रिक्तस्थानानि च पूरयत- (उचित विकल्प से चुनकर उत्तर दीजिए और रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए- Fill in the blanks with suitable answer from the options given.)

'मित्राभ्याम् दत्तं वचनं विस्मृत्य सः अवदत्'-अस्मिन् वाक्ये

(i) 'मित्राभ्याम्' इति पदे का विभक्तिः? " ……………… (तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी)
उत्तराणि:
चतुर्थी [दत्तम्' (दा धातु) योगे]

(ii) 'अवदत्' इति क्रियापदस्य कः कर्ता? – (मित्राभ्याम्, वचनम्, सः)
उत्तराणि:
सः

(iii) 'विस्मृत्य' इति पदे कः प्रत्ययः? (क्त्वा, तुमुन्, ल्यप्)
उत्तराणि:
ल्यप्

(iv) 'अवदत्' -अत्र कः लकारः? (लट्, लृङ् लृट्)
उत्तराणि:
लृङ्

(ख)
(i) कथमपि = ... + ... (कथ + मपि, कथम् + अपि, कथम + अपि)
उत्तराणि:
कथम् + अपि

(ii) तत्रैव = ... + ... (तत्र् + ऐव, तत्र + ऐव, तत्र + एव)
उत्तराणि:
तत्र + एव

(iii) पक्त्वा = ... + ...(पच् + क्त्वा, पक् + क्त्वा, प + क्त्वा)
उत्तराणि:
पच् + क्त्वा

(iv) नाभिनेन्दति = ... + ... (ना + अभिनन्दति, नाभि + नन्दति, न + अभिनन्दति)

उत्तराणि:

न + अभिनन्दति।

तृतीयः पाठः - स्वावलन्बनम्

➢ कठिन शब्दार्थाः

- समुद्ध- - धनी
- भृत्यः - नौकर
- आतिथ्यम् - अतिथि सत्कार
- कृषकदम्पती - किसान पति-पत्नी
- कर्मकरः - काम करने वाला
- साम्प्रतम् - अभी

➢ शब्दार्थाः

- सार्धद्वादशवादनम् - साढ़े बारह बजे
- चत्वारिंशत् - चालीस
- अष्टादश - अठारह
- प्रकोष्ठेषु - कमरों में
- पञ्चाशत् - पचास
- गवाक्षाः - खिड़कियाँ
- शक्नुवन्ति - सकते हैं
-
- सरलार्थ-
- 1-कृष्णमूर्ति श्रीकण्ठश्च मित्रे आस्ताम्। श्रीकण्ठस्य पिता समृद्धः आसीत्।
- अतः तस्य भवने सर्वविधानि सुख-साधनानि आसन्। तस्मिन् विशाले भवने चत्वारिंशत् स्तम्भाः आसन्। तस्य अष्टादश-प्रकोष्ठेषु पञ्चाशत् गवाक्षाः चतुश्चत्वारिंशत् द्वाराणि, षट्त्रिंशत् विद्युत्-व्यजनानि च आसन्। तत्र दश सेवकाः निरन्तरं कार्यं कुर्वन्ति स्म। परं कृष्णमूर्तेः माता पिता च निर्धनौ कृषकदम्पती। तस्य गृहम् आडम्बरविहीनं साधारणञ्च आसीत्।

- सरलार्थ-कृष्णमूर्ति और श्रीकण्ठ दो मित्र थे। श्रीकण्ठ के पिता धनवान थे। सिलिए उसके घर में सब प्रकार के सुख-साधन थे। उस बड़े घर में चालीस खम्बे थे। उसके अठारह कमरों मे पचास खिड़कियाँ और चवालीस दरवाजे और छत्तीस पंखे थे। वहाँ दस नौकर हमेशा काम करते रहते थे परन्तु कृष्णमूर्ति के माता-पिता किसान पति-पत्नि थे। उसका घर में आडम्बर नही था और साधारण घर था।
- 2-एकदा श्रीकण्ठः तेन सह प्रातः नववादने तस्य गृहम् अगच्छत्। तत्र कृष्णमूर्तिः तस्य माता पिता च स्वशक्त्या श्रीकण्ठस्य आतिथ्यम् अकुर्वन्। एतत् दृष्ट्वा श्रीकण्ठः अकथयत्-'मित्र, अहं भवतां सत्कारेण सन्तुष्टो-स्मि। केवलम् इदमेव मम दुःखं यत् तव गँहे एको-पि भृत्यः नास्ति। मम सत्काराय भवतां बहु कष्टं जातम्। मम गृहे तु बहवः कर्मकराः सन्ति।' तदा कृष्णमूर्तिः अवदत्-'मित्र, ममापि अष्टौ कर्मकराः सन्ति। ते च द्वौ पादौ, द्वौ हस्तौ, द्वे नेत्रे, द्वे श्रोत्रे इति। एते प्रतिक्षणं मम सहायकाः । किन्तु तव भृत्याः सदैव सर्वत्र च उपस्थिताः भवितुं न शक्नुवन्ति। त्वं तु स्वकार्याय भृत्याधीनः । यदा यदा ते अनुपस्थिताः, यदा यदा त्वं कष्टम् अनुभवसि। स्वावलम्बने तु सर्वदा सुखमेव, न कदापि कष्टं भवति।'
- सरलार्थ-एक बार श्रीकण्ठ उसके साथ सवेरे ने बजे उसके घर गया। वहाँ कृष्णमूर्ति और उसके माता पिता जी ने अपने सामर्थ्य से श्रीकण्ठ का अतिथि-सत्कार किया । यह देखकर श्रीकण्ठ ने कहा-'मित्र,मै तुन्महारे सत्कार से संतुष्ट हूँ। केवल यह बात मुझे दुःखीकर रही है कि तुम्हारे घर में एक भी सेवक नही है। जिससे मेरे सत्कार के लिए आप सब ने बहुत कष्ट सहा है।
- मेरे घर में तो बहुत से सेवक है।' तब कृष्णमूर्ति बोला-'मित्र, मेरे भी आठ नौकर हैं।और वे दो पैर, दो आँखें ,दो हाथ और दो कान हैं।ये हर पल मेरे सहायक हैं। परंतु तुम्हारे नौकर सदा सब जगह उपस्थित नहीं हो सकते। तुम तो अपने कार्य के लिए अपने सेवकों के अधीन हो। जब-जब वे अनुपस्थित होते हैं-तब-तब तुम कष्ट का अनुभव करते हो। स्वावलम्बन में हमेशा सुख ही है,कभी कष्ट नही होता।
- 3-श्रीकण्ठः अवदत्-मित्र, तव वचनानि श्रुत्वा मम मनसि महती प्रसन्नता जाता। अधुना अहमपि स्वयमेव कर्तुम् इच्छामि। भवतु ,सार्धद्वादशवादनमिदम्। साम्प्रतं गृहं चलामि।
- सरलार्थ-श्रीकण्ठ बोला-'मित्र, तुम्हारे वचनों को सुनकर मेरे मन में बहुत प्रसन्नता हुई। अब मै भी अपना काम स्वयं ही करूँगा।' ठीक है-अब साढ़े बारह बजे हैं । मैं अब घर चलता हूँ।

अभ्यासः

➢ साहित्य

प्र–2 अधोलिखितानां प्रश्नानामुत्तराणि लिखत-

(क) कस्य भवने सर्वविधानि सुखसाधनानि आसन्?
उत्तर–श्रीकण्ठस्य भवने सर्वविधानि सुखसाधनानि आसन्।

(ख) कस्य गृहेकोऽपि भृत्यः नास्ति?
उत्तर–कृष्णमूर्तेः गृहेकर्मकराः भृत्यः नास्ति।

(ग) श्रीकण्ठस्य आतिथ्यम्के अकुर्वन्?
उत्तर–श्रीकण्ठस्य आतिथ्य म्कृष्णमूर्तेः पितरौ अकुर्वन्

(घ) सर्वदा कुत्र सुखम्?
उत्तर–सर्वदा स्वावलम्बने सुखम्।

(ङ) श्रीकण्ठः कृष्णमूर्तेःगृहं कदा अगच्छत्?
उत्तर–श्रीकण्ठः कृष्णमूर्तेः गृहं प्रातः नववादने अगच्छत्।

(च) कृष्णमूर्तेः कति कर्मकराः सन्ति?
उत्तर–कृष्णमूर्तेः अष्टौ कर्मकराः सन्ति।

➢ रचनात्मक–कार्यम्

प्र–3 चित्राणि गणयित्वा तदधः संख्यावाचक शब्दं लिखत-

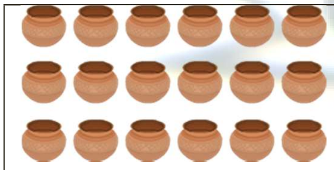	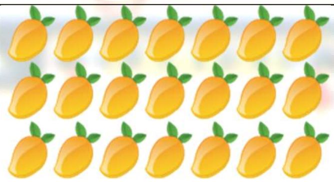	
अष्टादश	**एकविंशतिः**	**पञ्चदश**

	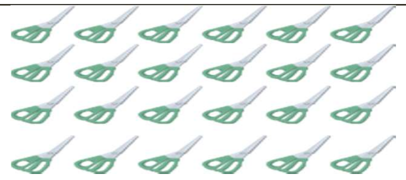	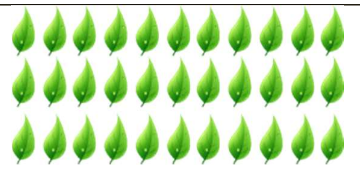
षट्त्रिंशत्	**चतुर्विंशतिः**	**त्रयस्त्रिंशत्**

प्र-4 मञ्जूषातः अङ्कानां कृते पदानि चिनुत-

चत्वारिंशत्   सप्तविंशतिः   एकत्रिंशत्   पञ्चाशत्   अष्टाविंशतिः   त्रिंशत्   चतुर्विंशतिः

28	अष्टाविंशतिः	27	सप्तविंशतिः
30	त्रिंशत्	31	एकत्रिंशत्
24	चतुर्विंशतिः	40	चत्वारिंशत्
50	पञ्चाशत्		

प्र-5 चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषातः पदानि च प्रयुज्य वाक्यानि रचयत-

कृषकाः	कृषकौ	एते	धान्यम्	एषः	कृषकः
एतौ	क्षेत्रम्	कर्षति	कुरुतः	खननकार्यम्	रोपयन्ति

(क) एष: कृषक: क्षेत्रम् कर्षति।

(ख) एतौ कृषकौ खननकार्यम् कुरुत:।

(ग) एते कृषका: धान्यम् रोपयन्ति।

प्र–6 अधोलिखिता न्समयवाचकान् अङ्का न्पदेषु लिखत-

• 10.30	सार्ध द्दशवादनम्
• 5.00	पञ्चवादनम्
• 7.00	सप्तवादनम्
• 3.30	सार्धत्रिवादनम्
• 2.30	सार्धद्विवादनम्
• 9.00	नववादनम्
• 11.00	एकादशवादनम्
• 12.30	सार्धद्वादशवादनम्
• 4.30	सार्धचुतर्वादनम्
• 8.00	अष्टवादनम्
• 1.30	सार्धएकःवादनम्
• 7.30	सार्धसप्तवादनम्

प्र–7 मञ्जूषात: पदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

षड्	**त्रिंशत्**	**एकत्रिंशत्**	**द्वौ**	**द्वादश**	**अष्टाविंशतिः**

(क) **षड्** ऋतवःभवन्ति।

(ख) मासाः **द्वादश** भवन्ति।

(ग) एकस्मिन्मासे **त्रिंशत्** अथवा **एकत्रिंशत्** दिवसाःभवन्ति।

(घ) फरवरी-मासे सामान्यतः **अष्टाविंशतिः** दिनानिभवन्ति।

(ङ) मम शरीरे **द्वौ** हस्तौ स्तः।

चतुर्थः पाठः - हास्यबाल कवि सम्मेलनम

➢ कठिन शब्दार्थाः

- अघः - नीचे
- मादृशाः - मेरे जैसे
- हस्तलाघवम् - हाथ की सफाई
- तुन्दस्य - तोंद के
- आवर्तयन् - फेरता हुआ
- उत्प्रेरितः - प्रेरित होकर

➢ शब्दार्थाः

- कोलाहलम् - शोर
- धुरन्धराः - श्रेष्ठ
- स्वकीयम् - अपने
- प्रत्यर्पणम् - लौटाना
- भोज्यलोलुपम् - खाने का लोभी
- कालयापकाः - समय बर्बाद करने वाले

सञ्चालकः - अलं-------------------------------------कुर्मः ।

संचालक-शोर करने से बस करो। आज बहुत प्रसन्नता का अवसर है कि इस कवि सम्मेलन में काव्यहन्ता अर्थात काव्य को नष्ट करनेवाले और कालयापक अर्थात समय बर्बाद करनेवाले भारत के श्रेष्ठ हास्य कवि आए हुए हैं।आओ हम सब तालियों से इनका स्वागत करें।

गजाधरः - सर्वेभ्यो-रसिकेभ्यो ----------------------धनानि च।।

गजाधर- सब नीरस जनों को नमस्कार। तब तक पहले मैं आधुनिक वैद्यों को लक्ष्य करके अपनी कविता सुनाता हूँ-

हे वैद्यराज-यमराज के भाई, आपको नमस्कार है। यमराज तो प्राण को ले जाता है, आप वैद्य लोग प्राण के साथ धन भी ले जाते है।

(सभी जोर से हँसते हैं।)

ग-कालान्तकः - अरे-------------------------------हस्तलाघवम्।

कालान्तक- अरे,वैद्य तो सब जगह है, परन्तु वे जनसंख्या कम करने में मेरे जैसे निपुण नहीं हैं।आप सब मेरे भी इस काव्य को सुनिए।

चिता को जलती हुई देखकर वैद्य ने आश्चर्य किया कि न मैं गया,न मेरा भाई,यह किसके हाथ की सफाई है।

(सभी जोर से हँसते हैं ।)

घ-तुन्दिलः तुन्दिलो,---------------------------------पुनः पुनः ।।

तुन्दिल-मैं तुन्दिल हूँ ।(अपनी तोंद पर हाथ फेरते हुए-) अरे ,मेरी भी इस कविता को सुनो और जीवन में अपनाओ- दुष्टबुद्धिवाले ,दूसरे का अन्न प्राप्त करके शरीर पर दया मत कर।संसार में दूसरे का अन्न दुर्लभ है। शरीर बार-बार मिलता रहता है।

(सभी जोर से हँसते हैं।

ङ-चार्वाकः -आम्, आम्------------------------पिबेत ।।

बालकः-------------------------------------च नमाम्यहम्।।

चार्वाक- हाँ,हाँ। शरीर का पोषण हमेशा ही ठीक रहता है। अगर धन नहीं है। तब कर्ज लेकर भी पौष्टिक पदार्थो का ही उपभोग करना चाहिए। और चार्वाक कवि कहते है-

जब तक जियो ,कर्ज लेकर भी घी पियो।

श्रोतागण-तो कर्ज को कैसे चुकाया जाए।

चार्वाक-मेरी बची हुई कविता भी सुनिए-

घी पीकर ,परिश्रम करके लोगों को कर्ज वापस कर देना चाहिए।

(काव्य पाठ से प्रेरित हो कर एक बालक भी तुरंत कविता की रचना करता है और हँसते हुए सुनाता है-)

बालक-अरे सुनो ,सुनिए, मेरी भी कविता-

गजाधर कवि और खाने के लोभी तुन्दिल,कालान्तर को तथा वैद्य चार्वाक को मैं प्रणाम करता हूँ।

(कविता सुनकर सभी हा,हा,हा करके सभी जोर से हँसते हैं और सभी अपने घर जाते हैं।)

<u>अभ्यासः</u>

➢ साहित्य

प्र–2 मञ्जूषातः अव्यय पदानि चित्वा वाक्यानि पूरयत-

अलम्	अन्तः	बहिः	अधः	उपरि

(क) वृक्षस्य <u>उपरि</u> खगाःवसन्ति।

(ख) <u>अलम्</u> विवादेन।

(ग) वर्षाकाले गृहात् <u>बहिः</u> मागच्छ।

(घ) मञ्चस्य <u>अधः</u> श्रोतारः उपविष्टाः सन्ति।

(ङ) छात्राः विद्यालयस्य <u>अन्तः</u> प्रविशन्ति।

प्र–3 अशुद्धं पदं चिनुत-

(क) **<u>गमन्ति</u>**, यच्छन्ति, पृच्छन्ति,धावन्ति।

(ख) रामेण, गृहेण, सर्पेण, **<u>गजेण</u>**।

(ग) लतया ,**<u>मातया</u>**, रमया, निशया।

(घ) लते, रमे, **<u>माते</u>**, प्रिये।

(ङ) लिखति, गर्जति, फलति, **<u>सेवति।</u>**

प्र–4 मञ्जूषातः समानार्थक पदानि चित्वा लिखत-

प्रसन्नतायाः	**चिकित्सकम्**	**लब्ध्वा**	**शरीरस्य**	**दक्षाः**

- प्राप्य — <u>लब्ध्वा</u>
- कुशलाः — <u>दक्षाः</u>
- हर्षस्य — <u>प्रसन्नतायाः</u>
- देहस्य — <u>शरीरस्य</u>
- वैद्यम् — <u>चिकित्सकम्</u>

प्र–5 अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन लिखत-

(क) मञ्चे कति बालकवयः उपविष्टाः सन्ति?
उत्तर–मञ्चे चत्वारः बालकवयः उपविष्टाः सन्ति।

(ख) के कोलाहलं कुर्वन्ति?
उत्तर– श्रोतारः कोलाहलं कुर्वन्ति।

(ग) गजाधरः कम् उद्दिश्य काव्यं प्रस्तौति?
उत्तर–गजाधरः आधुनिकं वैद्यम् उद्दिष्य काव्यं प्रस्तौति।

(घ) तुन्दिलः कस्य उपरि हस्तम् आवर्त्तयति?
उत्तर–तुन्दिलः तुन्दस्य उपरि हस्तम् आवर्त्तयति।

(ङ) लोके पुनःपुनः कानि भवन्ति?
उत्तर–लोके पुनःपुनः शरीराणि भवन्ति।

(च) किं कृत्वाघृतं पिबेत्?
उत्तर–श्रमं कृत्वा घृतं पिबेत्

- **रचनात्मक–कार्यम्**

प्र–6 मञ्जूषातः पदानि चित्वा कथायाः पूर्तिं कुरुत-

नासिकायामेव	वारंवारम्	खड्गेन	दूरम्	मित्रता	मक्षिका
व्यजनेन	उपाविशत्	छिन्ना	सुप्तः	प्रियः	

पुरा एकस्य नृपस्य एकः प्रियः वानरः आसीत्। एकदा नृपः सुप्तः आसीत्। वानरः व्यजनेन तम् अवीजयत्। तदैव एका मक्षिका नृपस्य नासिकायाम् उपाविशत्। यद्यपि वानरः वारंवारम् व्यजनेनतां निवारयति स्म तथा पिसा पुनःपुनः नृपस्य नासिकाया मेव उपविशति स्म। अन्ते सः मक्षिकां हन्तुं खड्गेन प्रहारम् अकरोत्। मक्षिका तु उड्डीय दूरम् गता, किन्तु खड्ग प्रहारेण नृपस्य नासिका छिन्ना अभवत्। अत एवोच्यते- '' मूर्ख जनैः सह मित्रता नोचिता।"

- **व्याकरण**

प्र–7 विलोमपदानि योजयत-

- **अधः** उपरि
- अन्तः बहिः
- दुर्बुद्धे! सुबुद्धे!
- उच्चैः नीचैः
- दुर्लभम् सुलभम्

पञ्चमः पाठः–पण्डिता रमाबाई

➢ कठिन शब्दार्थाः

- परित्यज्य – छोड़कर
- सार्धैकवर्षात् – डेढ़ वर्ष
- प्रत्यागच्छत् – लौट आई
- दुर्भिक्षपीडिताः– अकाल पीड़ित
- अध्यापयत् – पढ़ाया

➢ शब्दार्थाः

- असहत – सहन किया
- स्वमातुः – अपनी माता से
- निराश्रिताः – बेसहारा
- मुद्रणम् – छपाई
- प्रारब्धवती – आरम्भ किया

Translation

- (क) स्त्रीशिक्षाक्षेत्रे अग्रगण्या पण्डिता रमाबाई 1858 तमे ख्रिष्टाब्दे जन्म अलभत। तस्याः पिता अनन्तशास्त्री डोंगरे माता च लक्ष्मीबाई आस्ताम्। तस्मिन् काले स्त्रीशिक्षायाः स्थितिः चिन्तनीया आसीत्। स्त्रीणां कृते संस्कृतशिक्षणं प्रायः प्रचलितं नासीत्। किन्तु डोंगरे रूढिबद्धां धारणां परित्यज्य स्वपत्नीं संस्कृतमध्यापयत्। एतदर्थं सः समाजस्य प्रतारणाम् अपि असहत। अनन्तरं रमा अपि स्वमातुः संस्कृतशिक्षां प्राप्तवती।
- शब्दार्थाः (Word Meanings) : चिन्तनीया-शोचनीय (pitiable), परित्यज्य-छोड़कर (giving up), अध्यापयत्-पढ़ाया (taught), प्रतारणाम्-ताड़ना को (to taunt), असहत-सहन किया (tolerated), स्वमातुः-अपनी माता से (from her mother), प्राप्तवती-प्राप्त की (received).
- सरलार्थ : स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में अग्रगण्या पण्डिता रमाबाई ने 1858 ई० में जन्म लिया। उनके पिता अनन्त शास्त्री डोंगरे और माता लक्ष्मीबाई थीं। उस समय में स्त्रियों की शिक्षा की दशा शोचनीय थी। स्त्रियों के लिए संस्कृत शिक्षा लगभग अप्रचलित थी। परन्तु डोंगरे ने रूढ़ियों से बँधी हुई धारणा को छोड़कर अपनी पत्नी को संस्कृत की शिक्षा

दी। इसके लिए उन्होंने समाज की ताड़ना को भी सहा। इसके बाद रमा ने भी अपनी माता जी से संस्कृत की शिक्षा प्राप्त की।

- (ख) कालक्रमेण रमायाः पिता विपन्नः सञ्जातः। तस्याः पितरौ ज्येष्ठा भगिनी च दुर्भिक्षपीडिताः दिवङ्गताः। तदनन्तरं रमा स्व-ज्येष्ठभ्रात्रा सह पद्भ्यां समग्रं भारतम् अभ्रमत्। भ्रमणक्रमे सा कोलकातां प्राप्ता। संस्कृतवैदुष्येण सा तत्र 'पण्डिता' 'सरस्वती' चेति उपाधिभ्यां विभूषिता। तत्रैव सा ब्रह्मसमाजेन प्रभाविता वेदाध्ययनम् अकरोत्। पश्चात् सा स्त्रीणां कृते वेदादीनां शास्त्राणां शिक्षायै आन्दोलनं प्रारब्धवती। 1880 तमे ख्रिष्टाब्दे सा विपिनबिहारीदासेन सह बाकीपुर न्यायालये विवाहम् अकरोत् । साधैकवर्षात्अनन्तरं तस्याः पतिः दिवङ्गतः।
- शब्दार्थाः (Word Meanings) :

  विपन्नः-निर्धन (poor), दुर्भिक्ष-अकाल (famine), कुर्वती करती हुई (while doing), आन्दोलनम्-आन्दोलन को (movement), प्रारब्धवती-आरम्भ किया (started), दिवङ्गताः-मृत्यु को प्राप्त हो गए (passed away), सार्धैकवर्षात्-डेढ़ साल से (के) (One and a half year).
- सरलार्थ :

  समय के बदलने से रमा के पिता निर्धन हो गए। उनके माता-पिता और बड़ी बहन अकाल से पीड़ित होकर मृत्यु को प्राप्त हो गए। इसके पश्चात् रमा अपने बड़े भाई के साथ पैदल सारे भारत में घूमती हुई कोलकाता पहुँचीं। संस्कृतविद्वता के कारण उन्हें वहाँ 'पण्डिता' और 'सरस्वती' उपाधियों द्वारा विभूषित किया गया। वहाँ ही ब्रह्म-समाज से प्रभावित होकर उन्होंने वेदों का अध्ययन किया। बाद में उन्होंने बालिकाओं और स्त्रियों के लिए संस्कृत और वेद-शास्त्र आदि की शिक्षा के लिए आन्दोलन आरम्भ किया। सन् 1880 ई० में उन्होंने विपिन बिहारी दास के साथ न्यायालय में विवाह किया। डेढ़ वर्ष के बाद उनके पति की मृत्यु हो गयी।
- (ग) तदनन्तरं मनोरमया सह जन्मभूमिं महाराष्ट्रं प्रत्यागच्छत्। नारीणां सम्मानाय शिक्षायै च सा स्वकीयं जीवनम् अर्पितवती। हण्टर-शिक्षा-आयोगस्य समक्षं रमाबाई नारीशिक्षाविषये स्वमतं प्रस्तुतवती।सा उच्चशिक्षार्थं इंग्लैण्डदेशं गतवती।तत्र ईसाईधर्मस्य स्त्रीविषयकैः उत्तमविचारैः प्रभाविता जाता।
- शब्दार्थाः (Word Meanings) :

  प्रत्यागच्छत् (प्रति+आगच्छत्)-लौट आई (returned), प्रस्तुतवती प्रस्तुत किया (presented.)
- सरलार्थः इसके पश्चात् वे पुत्री मनोरमा के साथ महाराष्ट्र लौट आईं। स्त्रियों के सम्मान और शिक्षा के लिए उन्होंने अपना जीवन अर्पित कर दिया। हण्टर-शिक्षा-आयोग के सामने रमाबाई ने महिला शिक्षा के विषय में अपना मत प्रस्तुत किया। वे

उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैण्ड गईं। वहाँ स्त्रियों के विषय में ईसाई धर्म के उत्तम विचारों से प्रभावित हुई ।

- (घ) इंग्लैण्डदेशात् रमाबाई अमरीकादेशम् अगच्छत्। तत्र सा भारतस्य विधवास्त्रीणां सहायतार्थम् अर्थसञ्चयम् अकरोत्। भारतं प्रत्यागत्य मुम्बईनगरे सा 'शारदा-सदनम्' अस्थापयत्। अस्मिन् आश्रमे निस्सहायाः स्त्रियः निवसन्ति स्म। तत्र स्त्रियः मुद्रण टङ्कण-काष्ठकलादीनाञ्च प्रशिक्षणमपि लभन्ते स्म।परम् इदं सदनं पुणेनगरे स्थानान्तरितं जातम्। ततः पुणेनगरस्य समीपे केडगाँव-नाम्नि स्थाने 'मुक्तिमिशन' नाम संस्थानं तया स्थापितम्। अत्र अधुना अपि निराश्रिताः स्त्रियः ससम्मानं जीवनं यापयन्ति।
- शब्दार्थाः (Word Meanings) :

अर्थसञ्चयम्-धन इकट्ठा करना (collect money), प्रत्यागत्य (प्रति+आगत्य)-लौटकर (after returning), निस्सहायाः (ब०व०)-बेसहारा (destitute), मुद्रणम्-छपाई (printing), टङ्कणम्-टाइप (typing), काष्ठकला-लकड़ी पर कलाकारी (wood craft), संस्थानम्-संस्था (institution), निराश्रिताः (ब०व०)-बेसहारा (destitute), ससम्मानं आदर सहित (with honour), यापयन्ति-बिताती हैं

- सरलार्थः

इंग्लैण्ड देश से रमाबाई अमरीका गईं। वहाँ उन्होंने भारत की विधवा महिलाओं की सहायता के लिए धन इकट्ठा किया। भारत लौटकर मुम्बई नगर में उन्होंने 'शारदा-सदन' स्थापित किया। इस आश्रम में बेसहारा स्त्रियाँ रहती थीं। वहाँ महिलाएँ छपाई, टाइप और लकड़ी की कलाकारी आदि का प्रशिक्षण भी लेती थीं। परन्तु इस सदन का पुणे नगर में स्थान परिवर्तन हो गया। इसके पश्चात् पुणे नगर के समीप केडगाँव नामक स्थान पर इनके द्वारा 'मुक्ति मिशन' नामक संस्था स्थापित की गई। यहाँ अब भी बेसहारा महिलाएँ सम्मान का जीवन बिताती हैं।

(ङ) 1922 तमे ख्रिष्टाब्दे रमाबाई-महोदयायाः निधनम् अभवत्। सा देश-विदेशानाम् अनेकासु भाषासु निपुणा आसीत्। समाजसेवायाः अतिरिक्तं लेखनक्षेत्रे अपि तस्याः महत्त्वपूर्णम् अवदानम् अस्ति। 'स्त्रीधर्मनीति', 'हाई कास्ट हिन्दू विमेन' इति तस्याः प्रसिद्ध रचनाद्वयं वर्तते।

- शब्दार्थाः (Word Meanings):

निधनम्-मृत्यु (death), अवदानम्-योगदान (contribution), समाजसेवायाः-समाजसेवा का (of social service), रचनाद्वयं-दो रचनाएँ (two works.) पण्डिता रमाबाई

- सरलार्थ :

सन् 1922 ई० में रमाबाई जी की मृत्यु हो गई। वह देश-विदेश की अनेक भाषाओं में

निपुण थीं। समाजसेवा के अलावा लेखन के क्षेत्र में भी उनका महत्त्वपूर्ण योगदान है। ‘स्त्री धर्म नीति’ और ‘हाई कास्ट हिन्दू विमेन’ ये उनकी प्रसिद्ध दो रचनाएँ हैं।

अभ्यासः

➢ साहित्य

प्र–1 एकपदेनउत्तरत-

(क) 'पण्डिता' 'सरस्वती' इति उपाधिभ्यां का विभूषिता?
उत्तर–'पण्डिता' 'सरस्वती' इति उपाधिभ्यां पंडिता रमाबाई विभूषिता।

(ख) रमाकुतः संस्कृत शिक्षां प्राप्तवती?
उत्तर–रमा स्वमातुः संस्कृत शिक्षां प्राप्तवती।

(ग) रमाबाई केन सह विवाहम् अकरोत्?
उत्तर–रमाबाई विपिनबिहारी दासेन सह विवाहम् अकरोत्।

(घ) कासां शिक्षायै रमाबाई स्वकीयं जीवनम् अर्पितवती?
उत्तर–नारीणां शिक्षायै रमाबाई स्वकीयं जीवनम् अर्पितवती।

(ङ) रमाबाई उच्च शिक्षार्थं कुत्र आगच्छत्?
उत्तर–रमाबाई उच्च शिक्षार्थं इंग्लैण्ड देशं आगच्छत्।

प्र–2 रेखाङ्कित पदानि आधृत्यप्रश्न निर्माणं कुरुत-

(क) <u>रमायाः</u> पिता समाजस्य प्रतारणाम् असहत।
उत्तर– कस्याः पिता समाजस्य प्रतारणाम् असहत?

(ख) <u>पत्युः</u> मरणानन्तरं रमाबाई महाराष्ट्रं प्रत्यागच्छत्।
उत्तर–कस्य मरणानन्तरं रमाबाई महाराष्ट्रं प्रत्यागच्छत्?

(ग) रमाबाई <u>मुम्बईनगरे</u> 'शारदा-सदनम्' अस्थापयत्।
उत्तर– रमाबाईकुत्र 'शारदा-सदनम्' अस्थापयत्?

(घ) 1922 तमेख्रिष्टाब्दे रमाबाई-महोदयायाः निधनम्अभवत्।
उत्तर– 1922 तमे ख्रिष्टाब्दे कस्याः निधनम् अभवत्?

(ङ) स्त्रियः शिक्षां लभन्ते स्म।
उत्तर– कस्मै शिक्षां लभन्ते स्म?

प्र–3 प्रश्ना नामुत्तराणि लिखत-

(क) रमाबाई किमर्थम् आन्दोलनं प्रारब्धवती?
उत्तर– रमाबाई स्त्रीणां कृते वेदादीनां शास्त्राणां शिक्षायै आन्दोलनं प्रारब्धवती।

(ख) निःसहायाःस्त्रियः आश्रमे किं किं लभन्ते स्म?
उत्तर– निःसहायाः स्त्रियः आश्रमे मुद्रण-टंकण-काष्ठकला दीनाञ्च लभन्ते स्म।

(ग) कस्मि न्विषये रमाबाई-महोदयायाः योगदानम् अस्ति?
उत्तर– समाजसेवायाः अतिरिक्तं लेखनक्षेत्रे अपि रमाबाई-महोदयायाः योगदानम् अस्ति।

(घ) केन रचना द्वयेन रमाबाई प्रशंसिता वर्तते?
उत्तर– 'स्त्रीधर्मनीति', 'हाईकास्टहिन्दूविमेन' इति रचनाद्वयेन रमाबाई प्रशंसिता वर्तते।

- ## व्याकरण

प्र–4अधोलिखितानां पदानां निर्देशानुसारं पद परिचय लिखत-

पदानि	मूलशब्दः	लिङ्गम्	विभक्तिः	वचनम्
यथा- वेदानाम्	वेद	पुँल्लिङ्गम्	षष्ठी	बहुवचनम्
पिता	पितृ	पुँल्लिङ्गम्	प्रथमा	एकवचनम्
शिक्षायै	शिक्षा	स्त्रीलिङ्गम्	चतुर्थी	एकवचनम्
कन्याः	कन्या	स्त्रीलिङ्गम्	प्रथमा	बहुवचनम्
नारीणाम्	नारी	स्त्रीलिङ्गम्	षष्ठी	बहुवचनम्
मनोरमया	मनोरमा	स्त्रीलिङ्गम्	तृतीया	एकवचनम्

प्र–5 अधोलिखितानां धातूनां लकारं पुरुषंवचनञ्च लिखत-

	धातुः	लकारः	पुरुषः	वचनम्
यथा- आसीत्	अस्	लङ्	प्रथमपुरुषः	एकवचनम्
कुर्वन्ति	'कृ'	लट्	प्रथमपुरुषः	बहुवचनम्
आगच्छत्	'गम्'	लङ्	प्रथमपुरुषः	एकवचनम्
निवसन्ति	'नि' उपसर्ग 'वस' धातु	लट्	प्रथमपुरुषः	बहुवचनम्
गमिष्यति	'गम्'	लृट	प्रथमपुरुषः	एकवचनम्
अकरोत्	'कृ'	लङ्	प्रथमपुरुषः	एकवचनम्

प्र–6 अधोलिखितानि वाक्यानि घटनाक्रमानुसारं लिखत-

(क) 1858 तमे ख्रिष्टाब्दे रमाबाई जन्म अलभत।
(ख) सास्वमातुः संस्कृत शिक्षां प्राप्तवती।
(ग) रमाबाई-महोदयायाः विपिन बिहारी दासेन सह विवाहः अभवत्।
(घ) सा उच्चाशिक्षार्थम् इंग्लैण्डदेशं गतवती।
(ङ) सा मुम्बई नगरे शारदा-सदनम् अस्थापयत्।
(च) 1922 तमे ख्रिष्टाब्दे रमाबाई-महोदयायाः निधनम् अभवत्।

षष्ठः पाठः – सदाचारः

➢ कठिन शब्दार्थाः

- आचारः – व्यवहार
- अनृतम् – झूठ
- औदार्यम् – उदारता
- ऋजुता – सरलता
- मृदुता – कोमलता
- वाचा – वाणी से
- परिवर्जयेत् – बचना चाहिए

➢ शब्दार्थाः

- श्वः – आने वाला कल
- कुर्वीत – करना चाहिए
- कौटिल्यम् – कुटिलता

- सेवेत्   - सेवा करनी चाहिए
- पूवाहे   - दोपहर से पहले
- पारम्पर्यक्रमागत- परम्पराक्रम से आया हुआ

सदाचारः पाठ का परिचय
प्रस्तुत पाठ के श्लोकों के द्वारा मनुष्य के सद्व्यवहार का ज्ञान दिया गया है। मनुष्य का आचरण समाज में, गुरुजन और माता-पिता एवं मित्रों के प्रति कैसा होना चाहिए, इसका उपदेश दिया गया है।
सदाचारः Summary
प्रस्तुत पाठ में सदाचार एवं नीति से सम्बन्धित बातें कही गई हैं। प्रथम श्लोक में कहा गया है आलस्य मनुष्य का महान शत्रु है और परिश्रम बन्धु। द्वितीय श्लोक में कहा गया है कि मृत्यु किसी की प्रतीक्षा नहीं करती। मनुष्य को समय रहते ही कार्य पूर्ण कर लेने चाहिएँ। तीसरे श्लोक में बताया है कि मनुष्य को प्रिय सत्य बोलना चाहिए तथा अप्रिय सत्य नहीं बोलना चाहिए। इसी प्रकार प्रिय असत्य भी नहीं कहना चाहिए। . चतुर्थ श्लोक में कहा है कि मनुष्य को कुटिल व्यवहार कदापि नहीं करना चाहिए। उसे अपने व्यवहार में सरलता, कोमलता तथा उदारता आदि रखनी चाहिए।
पाँचवें श्लोक में बताया गया है कि मनुष्य को श्रेष्ठ गुणों से युक्त व्यक्ति व माता-पिता की मन, वचन और कर्म से सेवा करनी चाहिए। छठे श्लोक में कहा है कि मित्र के साथ कलह करके व्यक्ति कभी भी सुखी नहीं रह सकता है। अतः मनुष्य को ऐसा नहीं करना चाहिए।
सदाचारः **Word Meanings Translation in Hindi**

(क) आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपूः।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति॥

अर्थः निश्चय से आलस्य मनुष्यों के शरीर में रहने वाला सबसे बड़ा दुश्मन (शत्रु) है। प्रयत्न (परिश्रम) के साथ उसका (मनुष्य का) कोई मित्र नहीं है जिसे करके वह दु:खी नहीं होता है।

(ख) श्वः कार्यमद्य कुर्वीत पूर्वाह्ने चापराह्निकम्।
नहि प्रतीक्षते मृत्युः कृतमस्य न वा कृतम्॥2॥

शब्दार्थाः (Word Meanings) :
कुर्वीत-करना चाहिए (should do), पूर्वाह्ने-दोपहर से पहले (in the forenoon), आपराह्निकम्-दोपहर का (of the afternoon), न प्रतीक्षते-प्रतीक्षा नहीं करती है (does not wait), कृतमस्य (कृतम् + अस्य)-इसका हो गया है (his work is done), वा-या (or)

सरलार्थ :
कल का काम आज कर लेना चाहिए और दोपहर का पूर्वाह्न में। मृत्यु प्रतीक्षा (इन्तज़ार) नहीं करती कि इसका काम हो गया या नहीं हुआ अर्थात् इसने काम पूरा कर लिया या नहीं। भाव यह है कि काम को कभी टालना नहीं चाहिए क्योंकि पता नहीं कब जीवन समाप्त हो जाए।

(ग) सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।
प्रियं च नानृतं ब्रूयात् एष धर्मः सनातनः॥3॥

शब्दार्थाः (Word Meanings) :
ब्रूयात्-बोलना चाहिए (should speak), प्रियम्-मधुर (sweet), सत्यं-सच (truth), अनृतम्-झूठ (lie), सनातन:-शाश्वत (सदा से चला आ रहा) (eternal), धर्म:-धर्म/आचार (ethic).

सरलार्थ :
सच बोलना चाहिए, प्रिय बोलना चाहिए, अप्रिय सच नहीं बोलना चाहिए और प्रिय झूठ भी

(घ) सर्वदा व्यवहारे स्यात् औदार्यं सत्यता तथा।
ऋजुता मृदुता चापि कौटिल्यं च न कदाचन ॥4॥

शब्दार्थाः (Word Meanings) :
सर्वदा-हमेशा (always), औदार्यम्-उदारता (generosity), ऋजुता-सीधापन (simplicity, straightforward), मृदुता-कोमलता (tenderness), कौटिल्यं-कुटिलता, टेढ़ापन (crookedness), न कदाचन-कभी नहीं (never).

सरलार्थ :
व्यवहार में हमेशा (सदैव) उदारता, सच्चाई, सरलता और मधुरता हो (होनी चाहिए), (व्यवहार

(ङ) श्रेष्ठं जनं गुरुं चापि मातरं पितरं तथा।
मनसा कर्मणा वाचा सेवेत सततं सदा॥5॥

शब्दार्थाः (Word Meanings) :
वाचा-वाणी से (by speech), मनसा-मन से (by heart), कर्मणा-कार्यों से (by actions), सततं-निरन्तर (ceaselessly), सदा-हमेशा (always), सेवेत-सेवा करनी चाहिए (should serve).

सरलार्थ :
सज्जन, गुरुजन और माता-पिता की भी हमेशा मन से, कर्म से और वाणी से निरन्तर सेवा

(च) मित्रेण कलहं कृत्वा न कदापि सुखी जनः।
इति ज्ञात्वा प्रयासेन तदेव परिवर्जयेत्॥6॥

शब्दार्थाः (Word Meanings) :
मित्रेण-मित्र से (with friend), कलह-झगड़ा (variance quarrel), न कदापि-कभी भी नहीं (never), प्रयासेन-प्रयत्न से (by efforts), परिवर्जयेत्-दूर रहना चाहिए (stay away).

सरलार्थ :
मित्र के साथ झगड़ा करके मनुष्य कभी भी सुखी नहीं रहता है। यह जानकर प्रयत्न से उसे (झगड़े को) ही छोड़ देना चाहिए।

अभ्यासः

- **साहित्य**

प्र–2 उपयुक्तथनानां समक्षम्'आम्' अनुपयुक्त कथनानां समक्षं'न' इति लिखत

(क) प्रातःकाले ईश्वरं स्मरेत्।	आम्
(ख) अनृतं ब्रूयात।	न
(ग) मनसा श्रेष्ठ जनं सेवेत।	आम्
(घ) मित्रेण कलहं कृत्वा जनः सुखी भवति।	न
(ङ) श्वः कार्यम् अद्य कुर्वीत।	आम्

प्र–3 एकपदेन उत्तरत-

(क) कःनप्रतीक्षते? **मृत्युः**
(ख) सत्यताकदाव्यवहारेस्यात्? **सर्वदा**
(ग) किंब्रूयात्? **सत्यम्/ प्रियम्**

(घ) केन सह कलहं कृत्वा नरः सुखीन भवेत्? **मित्रेण**

(ङ) कः महारिपुः अस्माक शरीरे तिष्ठति? **आलस्यम्**

प्र–4 रेखाङ्गित पदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) <u>मृत्युः</u> न प्रतीक्षते।
उत्तर–कः न प्रतीक्षते?

(ख) <u>कलहं</u> कृत्वा नरः दुःखी भवति।
उत्तर–किं कृत्वा नरः दुःखी भवति?

(ग) <u>पितरं</u> कर्मणा सेवेत।
उत्तर–**कम** कर्मणा सेवेत?

(घ) व्यवहारे <u>मृदुता</u> श्रेयसी।
उत्तर–व्यवहारे का श्रेयसी?

(ङ) <u>सर्वदा</u> व्यवहारेऋजुता विधेया।
उत्तर–कदा व्यवहारे ऋजुता विधेया?

रचनात्मक–कार्यम्

प्र–5 प्रश्नमध्ये त्रीणि क्रियापदानि सन्ति। तानि प्रयुज्य सार्थ-वाक्यानि रचयत।

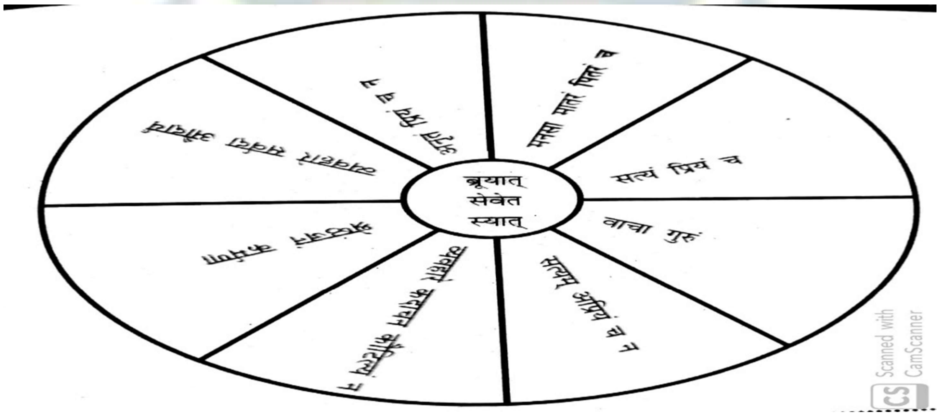

(क) अनृतं प्रिय च न ब्रूयात्।
(ख) व्यवहारे सर्वदा औदार्यं स्यात्।
(ग) श्रेष्ठ जनं कर्मणा सेवेत्।
(घ) व्यवहारे कदाचन कौटिल्यं न स्यात्।
(ङ) सत्यमं अप्रियं च न ब्रूयात्।
(च) वाचा गुरुं सेवेत्।
(छ) सत्यं प्रियं च ब्रूयात्।
(ज) मनसा मातरं पितरं च सेवेत्।

प्र–6 मञ्जूषातः अव्ययपदानि चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत-

तथा	न	कदाचन	सदा	च	अपि

(क) भक्तः **सदा** ईश्वरं स्मरति।
(ख) असत्यं **न** वक्तव्यम्।
(ग) प्रियं **तथा** सत्यंवदेत्।
(घ) लतामेधा **च** विद्यालयं गच्छतः।
(ङ) **अपि** कुशाली भवान्?
(च) महात्मा गान्धी **कदाचन** अहिंसां न अत्यजत्।

प्र–7 चित्रं दृष्ट्वा मञ्जूषातः पदानि च प्रयुज्य वाक्यानि रचयत-

(क) स: शिक्षक: कक्षायाम् श्यामपट्टे प्रश्नम् लिखति।

(ख) ते छात्रा: पुस्तिकायाम् उत्तराणिलिखन्ति।

(ग) शिक्षक: 'बालक:' पदम्लिखित।

(घ) केय न्छात्रा: श्यायपट्टम् पश्यन्ति।

(ङ) तत्र एकं पुस्तक म्मंचे अस्ति।

सप्तमः पाठः –सङ्कल्पः सिद्धिदायकः

➢ कठिन शब्दार्थाः

- पतिरुपेण – पति के रुप में
- जीवनाभिलाषः – जीवन की चाह
- आकुलितम् – परेशान

- शिलायाम् - चट्टान
- पुजोपकरणम् - पुजा की सामग्री
- तूष्णीम् - चुप

➢ शब्दार्थाः

- मनीषिता - चाहा गया
- मनसा - मन से
- वचसा - वचन से
- झटिति - जल्दी से
- अन्यथा - अन्य प्रकार से
- आकुलीभूय - परेशान होकर
- नेपथ्ये - परद के पीछे से
- पृष्ठतः - पीछे से

सङ.कल्पः सिद्धिदायकः Summary

इस पाठ में बताया गया है कि दृढ़ इच्छा शक्ति सिद्धि को प्रदान करने वाली होती है। कथा का सार इस प्रकार हैनारद के वचन से प्रभावित होकर पार्वती ने शिव को पति रूप में प्राप्त करने के लिए तप करने की इच्छा प्रकट की। पार्वती की माता मेना उसे तप करने के लिए निरुत्साहित करती हुई कहने लगी कि मनचाहे देवता औरसुख के सभी साधन तुम्हारे घर में हैं। तुम्हारा शरीर कोमल है जो कठोर तप के अनुकूल नहीं है। इसलिए तुम्हें तपस्या में प्रवृत्त नहीं होना चाहिए।

पार्वती ने माता को आश्वस्त करते हुए कहा कि वह किसी भी प्रकार की बाधा से भयभीत नहीं होगी तथा अभिलाषा के पूर्ण हो जाने पर पुनः घर लौट आएगी। इस प्रकार पार्वती अपनी माता को वचन देकर वन में जाकर तपस्या करने लगी। उनकी कठोर तपस्या से हिंसक पशु भी उनके मित्र बन गए। उन्होंने वेदों का अध्ययन किया तथा कठोर तपस्या का आचरण किया।
कुछ समय पश्चात् एक ब्रह्मचारी उनके आश्रम में आया। कुशलक्षेम पूछने के पश्चात् ब्रह्मचारी ने उनसे तपस्या का उद्देश्य जानना चाहा। पार्वती की सहेली के मुख से तपस्या का प्रयोजन जानकर वह जोर से हँसने लगा।

तब वह ब्रह्मचारी शिव की निंदा करने लगा। वह कहने लगा-शिव अवगुणों की खान है। वह श्मशान में रहता है। भूतप्रेत ही उसके अनुचर हैं। तुम उससे अपना मन हटा लो। शिव से सच्चा प्रेम करने वाली पार्वती शिव की निंदा सुनकर क्रोधित हो गईं। वह उस ब्रह्मचारी को बुरा भला कहने लगी और उसे वहाँ से चले जाने के लिए कहने लगी। ब्रह्मचारी के अडियल रवैये को देखकर पार्वती आश्रम से बाहर जाने को तत्पर हो गई। तब शिव ने अपना वास्तविक रूप प्रकट करके पार्वती से कहा कि मैं ब्रह्मचारी के रूप में शिव ही हूँ। आज तुम परीक्षा में उत्तीर्ण हो गई हो। यह सुनकर पार्वती अत्यधिक प्रसन्न हो गईं।

सड.कल्पः सिद्धिदायकः Word Meanings Translation in Hindi

(क) पार्वती शिवं पतिरूपेण अवाञ्छत्। एतदर्थं सा तपस्यां कर्तुम् ऐच्छत्। सा स्वकीयं
मनोरथं मात्रे न्यवेदयत्। तच्छ्रुत्वा माता मेना चिन्ताकुला अभवत्।

शब्दार्थाः (Word Meanings): अवाञ्छत् - चाहती थी (wanted/wished), एतदर्थम् (एतत्+अर्थम्)-इसके लिए (for this), कर्तुम्-करने के लिए (to do), ऐच्छत्-चाहती थी (wanted), मात्रे-माता को (to mother), न्यवेदयत्-निवेदन किया/बताया (told/informed), तच्छ्रुत्वा (तत्+श्रुत्वा)-यह सुनकर (hearing this), चिन्ताकुला-चिन्ता से व्याकुल (restless with worry).

सरलार्थ :

पार्वती शिव को पति के रूप में चाहती थी। इसके लिए वह तपस्या करना चाहती थी। उसने अपनी इच्छा माँ को बताई। यह सुनकर माँ मेना चिन्ता से व्याकुल हो गईं।

(ख) मेना- वत्से! मनीषिता देवता: गृहे एव सन्ति। तपः कठिनं भवति। तव शरीरं सुकोमलं वर्तते। गृहे एव वस।
अत्रैव तवाभिलाषः सफलः भविष्यति।

पार्वती- अम्ब! तादृशः अभिलाषः तु तपसा एव पूर्णः भविष्यति। अन्यथा तादृशं च पतिं कथं प्राप्स्यामि। अहं तपः एव चरिष्यामि इति मम सङ्कल्पः।

मेना- पुत्रि! त्वमेव मे जीवनाभिलाषः।।

पार्वती- सत्यम्। परं मम मनः लक्ष्यं प्राप्तुम् आकुलितं वर्तते। सिद्धिं प्राप्य पुनः तवैव शरणम् आगमिष्यामि। अद्यैव विजयया साकं गौरीशिखरं गच्छामि। (ततः पार्वती निष्क्रामति)

शब्दार्थाः (Word Meanings) :
वर्तते-है (is), तवाभिलाषः (तव+अभिलाषः)-तुम्हारी अभिलाषा (your desire), तपसा-तप द्वारा (with penance), अन्यथा-नहीं तो (otherwise), प्राप्स्यामि-पाऊँगी (shall obtain), चरिष्यामि-करूँगी (shall observe), प्राप्तुम्-पाने के लिए (to obtain), प्राप्य-पाकर (having obtained), अद्यैव (अद्य + एव)-आज ही (today only), साकम्-साथ (with),निष्क्रामति-निकल जाती है (goes out), सङ्कल्पः-संकल्प (determination).

सरलार्थः
मेना- बेटी! इष्ट देवता तो घर में ही होते हैं। तप कठिन होता है। तुम्हारा शरीर कोमल है। घर पर ही रहो। यहीं तुम्हारी अभिलाषा पूरी हो जाएगी। पार्वती- माँ! वैसी अभिलाषा तो तप द्वारा ही पूरी होगी। अन्यथा मैं वैसा पति कैसे पाऊँगी। मैं तप ही करूँगी-यह मेरा संकल्प है। मेना- पुत्री, तुम ही मेरी जीवन अभिलाषा हो। पार्वती- ठीक है। पर मेरा मन लक्ष्य पाने के लिए व्याकुल है। सफलता पाकर पुनः तुम्हारी ही शरण में आऊँगी। आज ही विजया के साथ गौरी शिखर पर जा रही हूँ। (उसके बाद पार्वती बाहर चली जाती है)

(ग) (पार्वती मनसा वचसा कर्मणा च तपः एव तपति स्म। कदाचिद् रात्रौ स्थण्डिले,
कदाचिच्च शिलायां स्वपिति स्म। एकदा विजया अवदत्।)
विजया- सखि! तपःप्रभावात् हिंस्रपशवोऽपि तव सखायः जाताः।
पञ्चाग्नि-व्रतमपि त्वम् अतपः। पुनरपि तव अभिलाष: न पूर्णः अभवत्।
पार्वती- अयि विजये! किं न जानासि? मनस्वी कदापि धैर्यं न परित्यजति। अपि च मनोरथानाम् अगतिः नास्ति।
विजया- त्वं वेदम् अधीतवती। यज्ञं सम्पादितवती। तपःकारणात् जगति तव प्रसिद्धिः।
'अपर्णा' इति नाम्ना अपि त्वं प्रथिता पुनरपि तपसः फलं नैव दृश्यते।

शब्दार्थाः (Word Meanings) :
मनसा-मन से (in mind), वचसा-वाणी द्वारा (in speech), कर्मणा-कर्म द्वारा (by one's deed), कदाचित्-कभी (sometimes), रात्रौ-रात को (at night), स्थण्डिले-भूमि पर (on barrenland), स्वपिति स्म-सोती थी (slept), हिंम्रपश्वः-हिंसक पशु (ferocious animals),

सखायः-मित्र (friends), पुनरपि (पुनः + अपि)-फिर भी (inspite of that), अतपः-तप किया (did penance), किं न जानासि-क्या नहीं जानती हो (do you not know), मनस्वी-ज्ञानी (high-minded), अधीतवती-अध्ययन किया (did study), जगति-जगत में (in the world), नाम्ना-नाम से (by name), प्रथिता-विख्यात (famous), तपसः-तप का (of penance), दृश्यते-दिखाई देता है (is seen).

सरलार्थः

(पार्वती ने मन, वचन व कर्म से तप ही किया। कभी रात को भूमि पर और कभी शिला पर सोती थी। एक बार विजया ने कहा)

विजया- सखी! तप के प्रभाव से हिंसक पशु भी तुम्हारे मित्र बन गए हैं। पञ्चाग्नि व्रत भी तुमने किया। फिर भी तुम्हारी इच्छा पूर्ण नहीं हुई।

पार्वती- अरी विजया! क्या तुम नहीं जानती हो? मनस्वी कभी धैर्य नहीं छोड़ता है। एक बात और इच्छाओं की कोई सीमा नहीं होती।

विजया- तुमने वेद का अध्ययन किया। यज्ञ किया। तप के कारण तुम्हारी संसार में ख्याति

(घ) पार्वती- अयि आतुरहृदये! कथं त्वं चिन्तिता .... ।

(नेपथ्ये-अयि भो! अहम् आश्रमवटुः। जलं वाञ्छामि।)

(ससम्भ्रमम्) विजये! पश्य कोऽपि वटुः आगतोऽस्ति।

(विजया झटिति अगच्छत्, सहसैव वटुरूपधारी शिवः तत्र प्राविशत्)

विजया-वटो! स्वागतं ते! उपविशतु भवान्। इयं मे सखी पार्वती। शिवं प्राप्तुम् अत्र तपः करोति।

शब्दार्थाः (Word Meanings) :

नेपथ्ये-परदे के पीछे (backstage), ससम्भ्रमम्-हड़बड़ाहट से (nervously), वटुः-ब्रह्मचारी (a bachelor scholar), झटिति-झट से (जल्दी) (quickly), उपविशतु-बैठिए (please sit), भवान्-आप (your reversed self), इयं-यह (this).

सरलार्थः

पार्वती- अरे, व्याकुल हृदय वाली, तुम चिन्तित क्यों हो? (परदे के पीछे- अरे कोई है! मैं आश्रम में रहने वाला ब्रह्मचारी हूँ। मैं पानी पीना चाहता हूँ। (मुझे पानी चाहिए)। (हड़बड़ाहट से)। विजया! देखो कोई ब्रह्मचारी आया है। (विजया झट से गई और सहसा ही वटुरूपधारी शिव ने

प्रवेश किया) विजया- हे ब्रह्मचारी आपका स्वागत है। कृपया बैठिए। यह मेरी सखी पार्वती है जो शिव को पति रूप में पाने के लिए तप कर रही है।

(ङ) वटुः- हे तपस्विनि! किं क्रियार्थं पूजोपकरणं वर्तते, स्नानार्थं जलं सुलभम् भोजनार्थं फलं वर्तते? त्वं तु जानासि एव शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।

(पार्वती तूष्णीं तिष्ठति) वटुः- हे तपस्विनि! किमर्थं तपः तपसि? शिवाय?

(पार्वती पुनः तूष्णीं तिष्ठति)

विजया-(आकुलीभूय) आम्, तस्मै एव तपः तपति।

(वटुरूपधारी शिवः सहसैव उच्चैः उपहसति)

वटुः- अयि पार्वति! सत्यमेव त्वं शिवं पतिम् इच्छसि? (उपहसन्) नाम्ना शिवः

अन्यथा अशिवः। श्मशाने वसति। यस्य त्रीणि नेत्राणि, वसनं व्याघ्रचर्म, अङ्गरागः चिताभस्म, परिजनाश्च भूतगणाः। किं तमेव शिवं पतिम् इच्छसि?

शब्दार्थाः (Word Meanings) :

क्रियार्थम्-तप की क्रिया के लिए (for doing penance), शरीरमाद्यम् (शरीरम् आद्यम्)-शरीर सर्वप्रथम (body is foremost), तूष्णीम्-चुपचाप (quiet), आकुलीमूय-व्याकुल होकर (getting agitated), उपहसति-उपहास करता है (makes fun), अशिवः-अशुभ (inauspicious), श्मशाने-श्मशान में (in the cremation ground), वसनम् वस्त्र (clothing), परिजनाश्च-(परिजनाः + च) और परिजन (all attendants), उपहसन् उपहास करते हुए (making fun).

सरलार्थः

वटुः- हे तपस्विनी! क्या तपादि करने के लिए पूजा-सामग्री है, स्नान के लिए जल उपलब्ध है? भोजन के लिए फल हैं। तुम तो जानती ही हो शरीर ही धर्म का आचरण के लिए मुख्य साधन है। (पार्वती चुपचाप बैठी है)

वटुः- हे तपस्विनी किसलिए तप कर रही हो? शिव के लिए?

(पार्वती फिर भी चुप बैठी है)

विजया- (व्याकुल होकर) हाँ, उसी के लिए तप कर रही है।
(वटुरूपधारी शिव अचानक ही ज़ोर से उपहास करता है)
वटुः- अरी पार्वती! सच में तुम शिव को पति (रूप में) चाहती हो? (उपहास/मज़ाक करते हुए) वह नाम से शिव अर्थात् शुभ है अन्यथा अशिव अर्थात् अशुभ है। श्मशान में रहता है। जिसके तीन नेत्र हैं, वस्त्र व्याघ्र की खाल है, अंगलेप चिता की भस्म और सेवकगण भूतगण हैं। क्या तुम उसी शिव को पति के रूप में पाना चाहती हो?

(च) पार्वती- (क्रुद्धा सती) अरे वाचाल! अपसर। जगति न कोऽपि शिवस्य यथार्थं स्वरूपं जानाति। यथा त्वमसि तथैव वदसि।
(विजयां प्रति) सखि! चल। यः निन्दां करोति सः तु पापभाग् भवति एव, यः शृणोति सोऽपि पापभाग् भवति।
(पार्वती द्रुतगत्या निष्क्रामति। तदैव पृष्ठतः वटोः रूपं परित्यज्य शिवः तस्याः
हस्तं गृह्णाति। पार्वती लज्जया कम्पते)
शिव- पार्वति! प्रीतोऽस्मि तव सङ्कल्पेन अद्यप्रभृति अहं तव तपोभिः क्रीतदासोऽस्मि।
(विनतानना पार्वती विहसति)

शब्दार्थाः (Word Meanings) :
वाचाल-बातूनी (one who talks too much/babbler), अपसर-दूर हट (go away), न कोऽपि (कः + अपि)-कोई भी नहीं (no body), पापभाग पापी (sinful), द्रुतगत्या-तीव्र गति से (hastily), पृष्ठतः-पीछे से (from behind), गृह्णति पकड़ लेता है (holds), लज्जया-लज्जा से (with shame), अद्यप्रभृति-आज से (today onwards), क्रीतदासः-खरीदा हुआ दास (slave), विनतानना-झुके हुए मुख वाली (with face hung).

सरलार्थः
पार्वती- (क्रुद्ध होकर) अरे वाचाल! चल हट। संसार में कोई भी शिव के यथार्थ (असली) रूप को नहीं जानता। जैसे तुम हो वैसे ही बोल रहे हो। (विजया की ओर) सखी! चलो। जो निन्दा करता है वह पाप का भागी होता है, जो सुनता है वह भी पापी होता है। (पार्वती तेज़ी से (बाहर) निकल जाती है। तभी पीछे से ब्रह्मचारी का रूप त्याग कर शिव उसका हाथ पकड़ लेते हैं। पार्वती लज्जा से काँपती है।)

शिव- पार्वती! मैं तुम्हारे (दृढ़) संकल्प से खुश हूँ। आज से मैं तुम्हारा तप से खरीदा दास हूँ। (झुके मुख वाली पार्वती मुस्कुराती है)

अभ्यासः

➢ व्याकरण

प्र–2 उदाहरणम् अनुसृत्य रिक्तस्थानानि पूरयत-

(क) एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
यथा- वसतिस्म	वसतःस्म	वसन्तिस्म
पूजयतिस्म	पूजयतःस्म	पूजयन्तिस्म
रक्षितस्म	रक्षतःस्म	रक्षन्तिस्म
चरितस्म	चरतःस्म	चरन्तिस्म
करोतिस्म	कुरुतःस्म	कर्वन्तिस्म

(ख) पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
प्रथमपुरुषः	अकथयत्	अकथयताम्	अकथयन्
प्रथमपुरुषः	अपूजयत्	अपूजयताम्	अपूजयन्
प्रथमपुरुषः	अरक्षत्	अरक्षताम्	अरक्षन्

(ग) पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
मध्यमपुरुषः	अवसः	अवसतम्	अवसत
मध्यमपुरुषः	अपूजयः	अपूजयतम्	अपूजयत
मध्यमपुरुषः	अचरः	अचरतम्	अचरत

(घ) पुरुषः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्

उत्तमपुरुषः	अपठम्	अपठाव	अपठाम
उत्तमपुरुषः	अलिखम्	अलिखाव	अलिखाम
उत्तमपुरुषः	अरचयम्	अरचयाव	अरचयाम

➢ साहित्य

प्र–3 प्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन लिखत-

(क) तपः प्रभावात्के सखायः जाताः?

उत्तर–तपः प्रभावा त्हिंस्रपशवो पि सखायः जाताः।

(ख) पार्वती तपस्यार्थं कुत्र अगच्छत्?

उत्तर–पार्वती तपस्यार्थं गौरीशिखरम् अगच्छत्।

(ग) कः श्मशाने वसति?

उत्तर–शिवः श्मशाने वसति।

(घ) शिवनिन्दां श्रुत्वा का क्रुद्धा जाता?

उत्तर–शिवनिन्दां श्रुत्वा पार्वती क्रुद्धा जाता।

(ङ) वटुरूपेण तपोवनं कः प्राविशत्?

उत्तर–वटुरूपेण तपोवनं शिवः प्राविशत्।

प्र–4 कः /काकं/ कां प्रति कथयति-

यथा- वत्से! तपःकठिनंभवति?	**माता**	**पार्वतीम्**
(क) अहंतपःएव चरिष्यामि?	पार्वती	मेनाम्
(ख) मनस्वी कदापि धैर्यं न परित्यजति।	पार्वती	विजयाम्
(ग) अपर्णा इति नाम्ना त्वं प्रथिता।	विजया	पार्वतीम्
(घ) पार्वति! प्रीतोऽस्मितव सङ्कल्पेन।	शिवः	पार्वतीम्

(ङ) शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।	वटुः	विजयाम्
(च) अहं तव क्रीत दासोऽस्मि।	शिवः	पार्वतीम्

प्र–5 प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत-

(क) पार्वती क्रुद्धा सती किम् अवदत्?
उत्तर–पार्वती क्रुद्धा सती अवदत्यत् अरेवाचाल! अपसर। जगतिनकोऽ पिशिवस्य यथार्थं स्वरुपं जानाति। यथा त्वमसि तथैव वदसि।

(ख) कः पाप भाग्भवति?
उत्तर–शिवः निन्दायः करोति श्रृणोति च पापभा ग्भवति।

(ग) पार्वती किं कर्त्तुम् ऐच्छत्?
उत्तर–पार्वती तपस्यां कर्त्तुम् ऐच्छत्।

(घ) पार्वती कया सा कं गौरीशिखरं गच्छति?
उत्तर–पार्वती विजय यासा कं गौरीशिखरं गच्छति।

प्र–6 मञ्जूषातः पदानि चित्वा समानार्थकानि पदानि लिखत-

माता	मौनम्	प्रस्तरे	जन्तवः	नयनानि

- शिलायां — प्रस्तरे
- पशवः — जन्तवः
- अम्बा — माता
- नेत्राणि — नयनानि
- तूष्णीम् — मौनम्

प्र–7 उदाहरणानुसारं पद रचनां कुरुत-

यथा	वसतिस्म =	अवसत्।
(क)	पश्यतिस्म =	अपश्यत्।
(ख)	तपतिस्म =	अतपत्।

(ग)	चिन्तयतिस्म =	अचिन्तयत्।
(घ)	वदतिस्म =	अवदत्।
(ङ)	गच्छतिस्म =	अगच्छत्।

यथाअलिखत् = लिखतिस्म।

(क) अकथयत् = कथयतिस्म।
(ख) अनयत् = नयतिस्म।
(ग) अपठत् = पठतिस्म।
(घ) अधावत् = धावतिस्म।
(ङ) अहसत् = हसतिस्म।

अष्टमः पाठः - त्रिवर्णः ध्वजः

➢ कठिन शब्दार्थाः

- त्रिवर्णः ध्वजः - तीन रंगो वाला झंडा
- उत्तोलनम् - फहराना
- मोदकानि - लड्डू
- अराः - तीलियाँ
- प्रस्तोष्यन्ति - प्रस्तुत करेंगी

➢ शब्दार्थाः

- जानासि - जानते हो
- कीदृश - कैसा
- श्वेतः - सफेद

त्रिवर्णः ध्वजः Summary

आज स्वतंत्रता दिवस है। विद्यालय के प्राचार्य ध्वजारोहण करेंगे। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होंगे। विद्यार्थियों में मिठाई बाँटी जाएगी। . हमारे देश का झण्डा तिरंगा है। इसमें तीन रंग हैं। यथा-केसरिया, श्वेत तथा हरा। सबसे ऊपर केसरिया रंग है। यह शौर्य का सूचक है। बीच में सफेद रंग सत्य का तथा नीचे हरा रंग समृद्धि का सूचक है। इन रंगों का अन्य महत्त्व भी है। केसरिया रंग त्याग और उत्साह का सूचक है। श्वेत रंग सात्विकता और पवित्रता का सूचक है।

हरा रंग पृथ्वी की शोभा और उर्वरता का सूचक है। . झण्डे के बीच में नीले रंग का पहिया है। इसे अशोक चक्र कहते हैं। यह न्याय और प्रगति का प्रवर्तक है। सारनाथ में अशोक स्तम्भ है। उससे ही इसका ग्रहण किया गया है।

इस पहिए में 24 अरे हैं। भारत की संविधान सभा में 22 जुलाई, 1947 को इस झण्डे को स्वीकार किया गया था। यह झण्डा राष्ट्र गौरव का प्रतीक है। इसलिए स्वतन्त्रता दिवस और गणतन्त्र दिवस के अवसर पर ध्वजारोहण किया जाता है।

त्रिवर्णः ध्वजः **Word Meanings Translation in Hindi**

(क) (केचन बालकाः काश्चन बालिकाश्च स्वतन्त्रता-दिवसस्य ध्वजारोहणसमारोहे
सोत्साहं गच्छन्तः परस्परं संलपन्ति।)
देवेश:- अद्य स्वतन्त्रता-दिवसः। अस्माकं विद्यालयस्य प्राचार्यः ध्वजारोहणं करिष्यति। छात्राश्च सांस्कृतिककार्यक्रमान् प्रस्तोष्यन्ति। अन्ते च मोदकानि मिलिष्यन्ति।

शब्दार्थाः (Word Meanings) :
त्रिवर्णः ध्वजः-तिरंगा (तीन रंगों वाला) झंडा (tricolour flag), ध्वजारोहणसमारोहे-झण्डा फहराने के समारोह में (in flag-hoisting ceremony), गच्छन्तः-जाते हुए (while going), प्रस्तोष्यन्ति-प्रस्तुत करेंगे (will present), संलपन्ति-वार्तालाप करते हैं (are conversing), मोदकानि (ब०व०)-लड्डू (laddu/sweetmeats).

सरलार्थ :
(कुछ बालक और कुछ बालिकाएँ स्वतन्त्रता दिवस के ध्वजारोहण समारोह में उत्साहपूर्वक जाते हुए आपस में वार्तालाप कर रहे हैं।) देवेश-आज स्वतन्त्रता दिवस है। हमारे विद्यालय के प्रधानाचार्य ध्वजारोहण करेंगे (झंडा फहराएँगे) और विद्यार्थी सांस्कृतिक कार्यक्रमों को प्रस्तुत

(ख) डेविडः- शुचे! जानासि त्वम्? अस्माकं ध्वजः कीदृशः?
शुचिः- अस्माकं देशस्य ध्वजः त्रिवर्णः इति।

शब्दार्थाः (Word Meanings) :
जानासि-जानते हो (knows), कीदृशः-कैसा (How, like), त्रिवर्णः-तिरंगा (tricolour).

सरलार्थ :
डेविड-शुचि! क्या तुम जानती हो? हमारा झण्डा कैसा है? शुचि-हमारे देश का झंडा तिरंगा है।.

(ग) सलीमः-रुचे! अयं त्रिवर्णः कथम्?
रुचिः- अस्मिन् ध्वजे त्रयः वर्णाः सन्ति, अतः त्रिवर्णः। किं त्वम् एतेषां वर्णानां नामानि जानासि?
सलीमः- अरे! केशरवर्णः, श्वेतः, हरितः च एते त्रयः वर्णाः।

शब्दार्थाः (Word Meanings) :
वर्णाः (ब०व०)-रंग (colours), वर्णानां-रंगों का (of colours), केशरवर्णः-केसरी रंग (saffron colour), श्वेतः-सफेद (white), हरितः-हरा (green).

सरलार्थ :
सलीम - रुचि! यह तिरंगा क्यों है? रुचि- इस झंडे में तीन रंग हैं, इसलिए यह तिरंगा है। क्या तुम इन रंगों के नाम जानते हो? सलीम - अरे ! केसरी रंग, सफेद और हरा ये तीन रंग हैं ?.

(घ) देवेशः- अस्माकं ध्वजे एते त्रयः वर्णाः किं सूचयन्ति?

सलीमः- शृणु, केशरवर्णः शौर्यस्य, श्वेतः सत्यस्य, हरितश्च समृद्धेः सूचकाः सन्ति।

शुचिः- किम् एतेषां वर्णानाम् अन्यदपि महत्त्वम्?

शब्दार्थाः (Word Meanings) :
शृणु-सुनो (listen), हरितश्च (हरितः + च)-और हरा (and green), समृद्धेः-समृद्धि का (of prosperity), अन्यदपि (अन्यत् + अपि)-और भी (any other).

सरलार्थ :
देवेश- हमारे ध्वज में ये तीन रंग क्या सूचित करते हैं?
सलीम- सुनो, केसरी रंग वीरता का, सफ़ेद सत्य का और हरा समृद्धि का सूचक है।
शुचि- क्या इन रंगों का कोई और भी महत्त्व है?

(ङ) डेविडः- आम्! कथं न? ध्वजस्य उपरि स्थितः केशरवर्णः त्यागस्य उत्साहस्य च

सूचकः। मध्ये स्थितः श्वेतवर्णः सात्त्विकतायाः शुचितायाः च द्योतकः। अधः स्थितः हरितवर्णः वसुन्धरायाः सुषमायाः उर्वरतायाश्च द्योतकः।

तेजिन्दरः- शुचे! ध्वजस्य मध्ये एकं नीलवर्णं चक्रं वर्तते?

शुचिः - आम् आम्। इदम् अशोकचक्रं कथ्यते। एतत् प्रगतेः न्यायस्य च प्रवर्तकम्।

सारनाथे अशोकस्तम्भः अस्ति। तस्मात् एव एतत् गृहीतम्।

शब्दार्थाः (Word Meanings) : कथम् न-क्यों नहीं (why not), उपरि-ऊपर का (above), मध्ये-बीच में (in the middle), शुचितायाः-ईमानदारी से (of honesty), अधः-नीचे (below), वसुन्धरायाः-पृथ्वी का (of the earth), सुषमायाः-कान्ति/सौन्दर्य का (of beauty), उर्वरतायाः

उपजाऊपन का (of fertility), नीलवर्णम्-नीले रंग का (of blue colour), वर्तते-है (is), कथ्यते-कहा है (is said to be), प्रगते:-प्रगति का (of progress), प्रवर्तकम्-सूचक - (indicator), गृहीतम्-लिया गया है (is taken)

सरलार्थ :

डेविड- हाँ, क्यों नहीं, ध्वज के ऊपर स्थित केसरी रंग त्याग व उत्साह का सूचक है। बीच में स्थित सफ़ेद रंग सात्विकता और ईमानदारी का द्योतक है। नीचे स्थित हरा रंग पृथ्वी की सुषमा व उर्वरता का द्योतक है।

तेजिन्दर- हे शुचि! ध्वज के मध्य में एक नीले रंग का चक्र है?

शुचि- हाँ हाँ! यह अशोक चक्र कहलाता है। यह प्रगति और न्याय का प्रवर्तक है। सारनाथ में अशोक स्तम्भ है। यह वहीं से लिया गया है।

(च) प्रणवः- अस्मिन् चक्रे चतुर्विंशतिः अराः सन्ति।

मेरी- भारतस्य संविधानसभायां 22 जुलाई 1947 तमे वर्षे समग्रतया अस्य ध्वजस्य स्वीकरणं जातम्।

तेजिन्दर:- अस्माकं त्रिवर्णः ध्वजः स्वाधीनतायाः राष्ट्रगौरवस्य च प्रतीकः। अत एव

स्वतन्त्रतादिवसे गणतन्त्रदिवसे च अस्य ध्वजस्य उत्तोलनं समारोहपूर्वकं भवति।

जयतु त्रिवर्णः ध्वजः, जयतु भारतम्।

शब्दार्थाः (Word Meanings) :

अरा:-तीलियाँ (spokes), संविधानुसमायाम्-संविधान सभा में (in the Parliament Assembly), स्वीकरणम्-स्वीकरण/अपनाना (adopting/accepting), जातम् -हो गया (was done), उत्तोलनम् - फहराना (hoisting), समग्रतया-सर्वमत से (unanimously).

सरलार्थ :

प्रणवः- इस चक्र में 24 तीलियाँ हैं।

मेरी- भारत की संविधान सभा में 22 जुलाई 1947 के साल में (को) सर्वसंमति से इस ध्वज को अपनाया गया था। तेजिन्दर- हमारा तिरंगा झण्डा स्वाधीनता और राष्ट्रगौरव का प्रतीक/चिहन है। इसलिए स्वतन्त्रता

दिवस और गणतन्त्र दिवस पर इस ध्वज को समारोहपूर्वक फहराया जाता है। तिरंगा झण्डा विजयी हो अर्थात् तिरंगे झंडे की जय हो। भारत की जय हो।

अभ्यासः

➢ साहित्य

प्र–1 शुद्धकथनस्य समक्षम् 'आम्' अशुद्धकथनस्य समक्षं 'न' इति लिखत-

(क) अस्माकं राष्ट्रस्य ध्वजेत्रयः वर्णाः सन्ति।	आम्
(ख) ध्वजे हरितवर्णः शान्तेः प्रतीकः अस्ति।	न
(ग) ध्वजेकेशर वर्णः शक्त्याः सूचकः अस्ति।	आम्
(घ) चक्रेत्रिंशत् अराः सन्ति	न
(ङ) चक्रं प्रगतेः द्योतकम्।	आम्

➢ व्याकरण

प्र–2 अधोलिखितेषु पदेषु प्रयुक्तां विभक्तिं वचनं च लिखत-

	पदानि	**विभक्ति:**	**वचनम्**
यथा-	त्रयाणाम्	षष्ठी	बहुवचनम्
	समृद्धेः	षष्ठी	एकवचनम्
	वर्णानाम्	षष्ठी	बहुवचनम्
	उत्साहस्य	षष्ठी	एकवचनम्
	नागरिकै:	तृतीया	बहुवचनम्
	सातित्त्वकतायाः	षष्ठी	एकवचनम्
	प्राणानाम्	षष्ठी	बहुवचनम्

सभायाम्　　　<u>सप्तमी</u>　　　एकवचनम्

➢ साहित्य

प्र–3 एकपदेन उत्तरत-

(क) अस्माकं ध्वजे कति वर्णाः सन्ति?
उत्तर–अस्माकं ध्वजे त्रयः वर्णाः सन्ति।

(ख) त्रिवर्णेध्वजे शक्त्याः सूचकः कः वर्णः?
उत्तर–त्रिवर्णेध्वजे शक्त्याः सूचकः केशरवर्णः।

(ग) अशोकचक्रं कस्य द्योतकम् अस्ति?
उत्तर–अशोकचक्रं प्रगतेः न्यायस्य च द्योतकम् अस्ति।

(घ) त्रिवर्णःध्वजः कस्य प्रतीकः?
उत्तर–त्रिवर्णःध्वजः स्वाधीनतयाः राष्ट्रगौरवस्य च प्रतीकः।

प्र–4 एकवाक्येन उत्तरत-

(क) अस्माकं ध्वजस्य श्वेतवर्णः कस्यसूचकः अस्ति?
उत्तर–अस्माकं ध्वजस्य श्वेतवर्णः सात्विकतायाः शुचितायाः च सूचकः अस्ति।

(ख) अशोकस्तम्भः कुत्र अस्ति?
उत्तर–अशोकस्तम्भः सारनाथे अस्ति।

(ग) त्रिवर्णध्वजस्य उत्तालनं कदा भवति?
उत्तर–त्रिवर्णध्वजस्य उत्तालन स्वतंत्रता दिवसे गणतंत्रता दिवसे च भवति।

(घ) अशोकचक्रे कति अराः सन्ति?
उत्तर–अशोकचक्रे चतुर्विंशतिः अराः सन्ति।

प्र–5 अधोलिखित वाक्येषु रेखाङ्कित पदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत-

(क) अस्माकं त्रिवर्णध्वजः विश्वविजयी भवेत्।
उत्तर–अस्माकं कःविश्व विजयी भवेत्?

(ख) स्वधर्मात् प्रमादं वयं च कुर्याम।
उत्तर–स्वधर्मा त्किम्वयं न कुर्याम?

(ग) एत त्सर्वम् अस्माकं नेतृणां सद्‌बुद्धेः सत्फलम्।
उत्तर–एत त्सर्वम् अस्माकं नेतृणां कैः सत्फलम्?

(घ) शत्रूणां समक्षं विजयः सुनिश्चितः भवेत्।
उत्तर–कस्य समक्षं विजयः सुनिश्चितः भवेत्?

प्र–6 उदाहरणानुसारंसमुचितैःपदैःरिक्तस्थानानिपूरयत-

शब्दा:	विभक्ति:	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
यथा पट्टिका	षष्ठी	पट्टिकाया:	पट्टिकयो:	पट्टिकानाम्:
अग्निशिखा	सप्तमी	अग्निशिखायाम्	अग्निशिखयो:	अग्निशिखासु
सभा	चतुर्थी	सभायै	सभाभ्याम्	सभाभ्य:
अहिंसा	द्वितीया	अहिंसाम्	अहिंसे	अहिंसा:
सफलता	पञ्चमी	सफलतया:	सफलताभ्याम्	सफलताभ्य:
सूचिका	तृतीया	सूचिकया	सूचिकाभ्याम्	सूचिकाभि:

प्र–7   समुचित मेलनं कृत्वा लिखत-

क	ख
• केशरवर्णः	शौर्यस्य त्यागस्य च सूचकः।
• हरितवर्णः	सुषमायाः उर्वरतायाःच सूचकः।
• अशोकचक्रम्	प्रगतेः न्यायस्य च प्रवर्तकम्।
• त्रिवर्णःध्वजः	स्वाधीनतायाः राष्ट्रगौरवस्य च प्रतीकः।
• त्रिवर्णध्वजस्यस्वीकरणं	22 जुलाई 1947 तमे वर्षे जातम्।